सितंबर 2024

₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

बोले यूपी

लाल टोपी

R.N.I. No. 68832/97

जब सत्ताधारी दल के लोग लाल टोपी से परेशान होने लगें तब समझ लेना चाहिए कि समाजवादी लोग सही रास्ते पर हैं। दरअसल भाजपा को लाल टोपी से अपने लिए खतरा लगता रहा है। लाल रंग की टोपी संघर्ष का प्रतीक है। जब लाल टोपी पर चर्चा होने लगे तो परिवर्तन होना तय है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन

सितंबर 2024
वर्ष 25 | संख्या 11

प्रिय पाठकों,

आपको बधाई एवं हृदय तल से आभार। आपकी प्रिय पत्रिका समाजवादी बुलेटिन अपने रजत जयंती वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। आप सभी के प्यार और उत्साहवर्धन की बदौलत यह संभव हो पाया। समाजवादी बुलेटिन के ढाई दशक के सफर में इसके नए कलेवर को आपने खूब सराहा। हम भरोसा दिलाते हैं कि वैचारिक स्तर पर आपको समृद्ध करने का हमारा प्रयास सतत जारी रहेगा। कृपया अपना स्नेह यूं ही बनाए रखें।

धन्यवाद

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक

प्रोफेसर रामगोपाल यादव

☎ 0522 - 2235454
samajwadibulletin19@gmail.com
bulletinsamajwadi@gmail.com
Mob:- 9598909095
/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए
19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित
अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित
R.N.I. No. 68832/97

अंदर

भाजपा राज पर जनता का भरोसा खत्म 10

12 कवर स्टोरी **बोले यूपी लाल टोपी**

फर्जी एनकाउंटरों पर घिरी यूपी सरकार 06

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार अपने अब तक के कार्यकाल में फर्जी एनकाउंटर व बुलडोजर वाली सरकार बनकर रह गई है। मुद्दा विहीन हो चुकी योगी सरकार लगातार कानून को ताक पर रखकर काम कर रही है। फर्जी एनकांउटरों पर यूपी की योगी सरकार पूरी तरह घिर चुकी है। अब यह आंकड़े भी सामने आ गए हैं कि 2017 से अप्रैल 2023 के बीच यूपी में 7503 एनकाउंटर हुए हैं जिसमें 183 लोग मारे गए यानी भाजपा सरकार को कानून हाथ में लेने में कोई संकोच नहीं है।

लोकतंत्र पर अविश्वास 04

डिंपल जी ने किया शहीद की प्रतिमा का अनावरण 40

लोकतंत्र पर अविश्वास

उदय प्रताप सिंह

मैं ने 15 अगस्त 2024 को लाल किले से प्रधानमंत्री के भाषण को बड़े ध्यान से सुना। आशा यह की जाती थी कि चुनाव के बाद अपनी पहली स्पीच में प्रधानमंत्री जी जनता के सामने अपने पांच साल के आगामी कार्यक्रम के बारे में कुछ ब्लूप्रिंट रखेंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

अपने 100 मिनट के भाषण में उन्होंने सर्वाधिक बल देकर जो बात कही वह यह थी कि "मैं देश को आगे ले जाना चाहता हूं लेकिन कुछ लोग हैं जो देश की उन्नति नहीं देखना चाहते वह मेरा विरोध करते हैं" किंतु प्रधानमंत्री जी ने यह इशारा नहीं किया कि आखिर यह लोग हैं कौन जो उनका विरोध कर रहे हैं। विरोध करने वाले किसान या अग्निवीर से नाराज़ नवयुवक या महंगाई से पीड़ित जनता या उनकी संकीर्णता और नफ़रत की बांटने वाली राजनीति का विरोध करने वाला विपक्ष है? आखिर कौन है जो उन्नति नहीं चाहता?

प्रधानमंत्री जी चुनाव के बाद तुरंत बाद यह भाषण दे रहे थे इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि जिन्होंने उन्हें वोट नहीं दिया और विपक्ष को वोट दिया है, यह उन मतदाताओं की ओर इशारा है। अगर ऐसा है तो यह लोकतंत्र

फोटो स्रोत : गूगल

पर अविश्वास है। क्या प्रधानमंत्री जी पूरे प्रतिपक्ष को और उनकी नीतियों का विरोध करने वालों को देश की उन्नति में बाधक मानते हैं?

सरकार की नीतियों का विरोध करना, उनके विरुद्ध प्रदर्शन करना यह संवैधानिक अधिकार जनता को प्राप्त है। प्रधानमंत्री जी भूल जाते हैं कि जिन्होंने उन्हें वोट नहीं दिया इस बार लेकिन पहले दिया था उन्हें प्रगति विरोधी कहना जिसका अर्थ प्रकरांतर से देशद्रोही होता है, क्या उचित होगा?

माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने स्वतंत्रता दिवस के भाषण में पुरानी फ़ाइल से फिर से यूनिफॉर्म सिविल कोड और वन नेशन वन इलेक्शन का पुराना राग दोहराया। मेरा ख्याल था कि पिछली बार से 63 सांसद कम हो जाने पर प्रधानमंत्री जी पिछली गलतियों को नहीं दोहराएंगे। यह दोनों बिल अगर बीजेपी के द्वारा लाए गए तो देश में और देश की जनता में नुक़सानदायक बंटवारा होगा। यह दोनों बातें आरएसएस के छिपे पुरातन एजेंडा में बहुत दिनों से पाली पोसी जा रही हैं।

उन्होंने अपने भाषण में स्पष्ट किया कि पिछले 75 सालों में जिस सिविल कोड के अंतर्गत देश चल रहा था, वह सेक्युलर है। अब वह जो सिविल कोड लेंगे वह सेक्युलर सिविल कोड होगा। यह भ्रमित बयान लगता है। किसी स्वस्थ विचारधारा से उत्पन्न बयान नहीं है। इस तरह का कोई भी कोड लाया जाएगा, वह सेक्युलर हो ही नहीं सकता और वन नेशन वन इलेक्शन का सिद्धांत गणराज्य के सिद्धांत के ठीक विपरीत है।

फर्जी एनकाउंटरों पर घिरी यूपी सरकार

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार अब तक के कार्यकाल में फर्जी एनकाउंटर व बुलडोजर वाली सरकार बनकर रह गई है। मुद्दा विहीन हो चुकी योगी सरकार लगातार कानून को ताक पर रखकर काम कर रही है। फर्जी एनकांउटरों पर यूपी की योगी सरकार पूरी तरह घिर चुकी है। अब मीडिया रिपोर्ट्स में यह आंकड़े भी सामने आ गए हैं कि 2017 से अप्रैल 2023 के बीच यूपी में 7503 एनकाउंटर हुए हैं जिसमें 183 लोग मारे गए यानी भाजपा सरकार को कानून हाथ में लेने में कोई संकोच नहीं है।

बुलडोजर के मामले में सुप्रीम कोर्ट के हस्तक्षेप के बाद फर्जी एनकाउंटर पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के प्रभावी व मजबूत

फोटो स्रोत : गूगल

घेराबंदी से भाजपा सरकार पूरी तरह घिर चुकी है। श्री अखिलेश यादव के मजबूती से फर्जी एनकाउंटर के खिलाफ खड़े हो जाने के बाद अब भाजपा सरकार द्वारा फर्जी एनकाउंटर करवाए जाने के पहलू पर मुहर लगती जा रही है।

न्याय व्यवस्था पर अटूट भरोसा रखने वाले समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव कानून हाथ में लेने वाली योगी सरकार के खिलाफ मुखर हैं और मजलूमों के साथ मजबूती से खड़े हैं।

सुल्तानपुर में जब योगी सरकार ने मंगेश यादव का एनकाउंटर कर अपनी पीठ थपथपानी शुरू की तो समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने तथ्यों व तर्कों के आधार पर मंगेश के एनकाउंटर को फर्जी बताते हुए सरकार को घेर लिया। श्री अखिलेश यादव का यह तर्क सभी को आसानी से समझ में भी आ गया कि दूसरी बिरादरी के आरोपित को एक दिन पहले ही पैर में गोली मारकर पकड़ा गया और मंगेश को जाति के आधार पर सीधे गोली मार दी गई। श्री यादव ने मंगेश की बहन के बयान के हवाले से बताया कि मंगेश को घर से रात में पकड़ा गया।

सुल्तानपुर में हुए इस एनकाउंटर के फर्जी होने के कई और तथ्य सामने आए। मसलन एनकाउंटर टीम की अगुआई कर रहे डिप्टी एसपी के हवाई चप्पल में मुठभेड़ में शामिल होना। श्री अखिलेश यादव इस एनकाउंटर के खिलाफ मजबूती से मुखर हुए तो सरकार के हाथ-पांव फूल गए। उसने मजिस्ट्रेटी जांच कराने का ढिंढोरा पीटना शुरू कर दिया।

श्री अखिलेश यादव ने इस फर्जी एनकाउंटर पर सरकार को कई स्तर पर घेरा। उन्होंने विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष लाल बिहारी यादव को मारे गए मंगेश यादव के जौनपुर स्थित आवास पर भेजा। वहां परिवार ने बताया कि मंगेश को रात में 2 बजे सादी वर्दी में आए लोग उठाकर ले गए थे और बाद में उन्हें एनकाउंटर की खबर मिली। परिवार ने पुलिस वालों पर हत्या की एफआईआर दर्ज कराने के लिए तहरीर भी दी मगर कोई सुनवाई नहीं हुई।

फर्जी एनकाउंटर पर श्री अखिलेश यादव लगातार सरकार को घेर रहे हैं। श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा राज में एनकाउंटर का एक पैटर्न सेट हो गया है। पहले किसी को उठाओ, फिर झूठी मुठभेड़ की कहानी बनाओ, फिर दुनिया को झूठी तस्वीरें दिखाओ और अगर हत्या के बाद परिवारवालों द्वारा सच बताने की कोशिश

भाजपा राज में यूपी फर्जी एनकाउंटरों की राजधानी -अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि लोकसभा चुनाव हारने के बाद से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री गुस्से में घूम रहे हैं। नकारात्मक दिल और दिमाग वाले विनाश ही कर सकते हैं, उनसे विकास संभव नहीं है क्योंकि जो हार्ट लेस हैं उससे कोई उम्मीद नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने उत्तर प्रदेश को फर्जी एनकाउंटर की राजधानी बना दिया है। भाजपा सरकार में जमींनों की लूट और चरम पर भ्रष्टाचार के साथ झूठे एनकाउंटर के नाम पर हत्याएं हो रही हैं।

श्री अखिलेश यादव से 13 सितंबर को मंगेश यादव के परिजनों ने समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय, लखनऊ में भेंट कर अपनी व्यथा बताई। मंगेश यादव को पुलिस ने घर से उठाकर फर्जी एनकाउण्टर में हत्या कर दी। मंगेश के शोकाकुल पिता, मां और बहन ने श्री अखिलेश यादव को पुलिस द्वारा उत्पीड़न किए जाने की भी जानकारी दी। श्री अखिलेश यादव ने पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने का भरोसा दिया।

इस से पहले 12 सितंबर को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय पर पत्रकारों से बातचीत करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि सुल्तानपुर की घटना में झूठे एनकाउंटर की कहानी गढ़ी जा रही है। सबको पता है कि एनकाउंटर के नाम पर हत्या की जाती है। मंगेश यादव की हत्या हुई है। गांव से लेकर आस-पास के लोग जानते हैं कि रात में पुलिस आई थी और उठाकर ले गई। मुख्यमंत्री जी को घर परिवार और उसके मां-बहन का दर्द समझ में नहीं आ रहा है।

श्री यादव ने कहा कि कैसा दिमाग है कि होशियारी दिखाते हुए चप्पल में जाकर एनकाउंटर कर दिया। फोटो में साफ दिख रहा है कि झूठा एनकाउंटर हुआ है। इसके पहले भी उत्तर प्रदेश में तमाम एनकाउंटरों पर उंगली उठी है। नोएडा में एक जिम इन्सट्रक्टर का झूठा एनकाउंटर हुआ था तब भी हम लोगों ने मामला उठाया था कि पुलिस वालों ने लूट के लिए एनकाउंटर किया है।

उस पर भी कोई कार्रवाई नहीं हुई। अभी तक प्रदेश में जितने भी झूठे एनकाउंटर के नाम पर हत्याएं हुई हैं उसमें सबसे ज्यादा पीडीए परिवार की हुई हैं। सरकार एनकाउंटर से लोगों को डराना चाहती है। बदनाम करने के लिए जानबूझ कर ढूंढ़-ढूंढ़कर एनकाउंटर किया जा रहा है। अधिकारी रात भर एनकाउंटर की रणनीति बनाते हैं और यह भी

रणनीति बनाते हैं कि हत्या करने पर वे कैसे बच सकते हैं। जब इस तरह के अधिकारी हैं तो उनसे कैसे न्याय मिलेगा?

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि हम जनता को न्याय दिलाने के लिए सदन से सड़क तक संघर्ष करेंगे। इसके लिए भी जैसा भी संघर्ष करना पड़ेगा समाजवादी लोग पीछे नहीं रहेंगे।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में अन्याय की सब सीमाएं पार हो गई हैं। कानून व्यवस्था ध्वस्त है। अपराधी खुलेआम घटना कर रहे हैं। सुल्तानपुर में अधिशासी अभियंता की पीट-पीटकर जान ले ली गई। पीड़ित परिवार के लोग न्याय के लिए भटक रहे हैं। भाजपा सरकार में किसी भी गरीब और पीड़ित को न्याय नहीं मिल रहा है।

की जाए तो दबाव व प्रलोभन से उन्हें दबाया जाए।

उन्होंने कहा कि यह भी पैटर्न है कि विपक्षी राजनीतिक दलों द्वारा भंडाफोड़ होने पर अपने दोयम दर्जे के नेताओं को आगे करके शीर्ष नेतृत्व को बचाया जाए और फिर 'जिसका दाना-उसका गाना' वाले संबंधों को निभाने वाले मीडिया को दुष्प्रचार के लिए लगाया जाए और झूठ में पारंगत अपने तथाकथित बड़े भाजपाई नेताओं से ऐसे ग़ैरक़ानूनी एनकाउंटर को सही साबित करने के लिए तर्कहीन बयानबाज़ी कराने में लगाया जाए।

श्री यादव का कहना है कि सच्चे मीडिया को विपक्ष या विदेशी समर्थन पर जीने वाला साबित करके उनकी बदनामी कराना भी इसी पैटर्न का हिस्सा है और जब जनाक्रोश बढ़ने पर औपचारिक, दिखावटी जांच कराकर मामला रफ़ा-दफ़ा करवाना सरकार का पैटर्न बन गया है।

उन्होंने कहा कि भाजपा अपने दल-बल के साथ ऐसे एनकाउंटरों को जितना अधिक सच साबित करने में लग जाती है, वह एनकाउंटर दरअसल उतना ही बड़ा झूठ होता है। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा ने सच का ही एनकाउंटर कर दिया है।

भाजपा राज पर जनता का भरोसा खत्म

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश में बढ़ते अपराध खासतौर पर महिला हिंसा में इजाफा और सरकार की नकारात्मक राजनीति के कारण भाजपा सरकार से जनता का भरोसा पूरी तरह खत्म हो गया है। योगी सरकार में लगातार हो रही महिलाओं के खिलाफ हिंसा ने समाज को चिंतित कर दिया है।

महिलाओं की सुरक्षा को लेकर समाजवादी सरकार में उठाए गए जरूरी कदम 1090 की दिन ब दिन खस्ता होती स्थिति की वजह से भी महिलाएं खुद को असुरक्षित महसूस कर रही हैं।

महिलाएं चाहती हैं कि 2027 में फिर समाजवादी सरकार बने ताकि उनकी सुरक्षा के माकूल और पुख्ता इंतजाम हो सके। अपराध के अलावा पेपर लीक, महंगाई, हाईकोर्ट के आदेश के बाद भी शिक्षकों की नियुक्ति न होने आदि ऐसे तमाम गंभीर मुद्दे हैं जिसने योगी सरकार पर भरोसा खत्म कर दिया है। जनता अब इस सरकार के जाने के जतन में जुट गई है।

यूपी में बढ़ते अपराध और महिलाओं के प्रति बढ़ती हिंसा से समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव न केवल दुखी हैं बल्कि चिंतित भी हैं। सबसे ज्यादा चिंता की बात यह है कि श्री अखिलेश यादव द्वारा बार-बार महिला हिंसा रोकने की आवाज बुलंद की जा रही है लेकिन सरकार मौन है। आंकड़े चीख-चीखकर कह रहे हैं कि उत्तर प्रदेश ही नहीं, भाजपा शासित राज्यों में महिलाओं के खिलाफ अपराधों में तेजी से इजाफा हुआ है। महिला हिंसा की आए-दिन आ रही खबरें भयावह हैं।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामले में भाजपाई और भाजपा सरकार सबसे ऊपर है। महिलाओं के ऊपर घोषित रूप से अत्याचार करने में देश में सबसे ज्यादा 54 सांसद, विधायक भाजपा के हैं। इसके अलावा भाजपा ने अपराध बढ़ाने में भी रिकार्ड बनाया है।

नकारात्मक राजनीति में भाजपा को महारत हासिल है।

आंकड़ों के हवाले से श्री अखिलेश यादव कहते हैं कि उत्तर प्रदेश सहित भाजपा शासित राज्यों में महिला अपराध सबसे ज्यादा हो रहे हैं। भाजपा सरकारें अपराधियों को संरक्षण देती हैं और दूसरे दलों और नेताओं को बदनाम करने का षड्यंत्र करती हैं। झूठे मुकदमें लगाकर अन्याय करती हैं। महिला अपराध ही नहीं भाजपा ने धांधली, भ्रष्टाचार समेत कई जनविरोधी रिकार्ड बनाए हैं।

उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में बहू-बेटियां सुरक्षित नहीं हैं। भाजपा सरकार में बेटियों की सुरक्षा भगवान भरोसे है। मुख्यमंत्री जी सुरक्षा के हवाई दावे करते रहते हैं। लगातार छेड़छाड़ की हो रही घटनाओं से बेटियां दहशत में जीने को मजबूर हैं। पीड़ितों को कई-कई दिन थाना-चौकियों के चक्कर लगाने पड़ते हैं तब भी सुनवाई नहीं होती है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि छुट्टा पशुओं से सबसे अधिक मौतें भाजपा काल में हुईं। पुलिस हिरासत में मौत का रिकॉर्ड भाजपा काल में बना।

सबसे कम समय में सबसे ज़्यादा आरक्षण विरोधी क़ानून भाजपा ने लाने की साज़िश की। सबसे बड़ा आरक्षण घोटाला (69000 शिक्षक भर्ती में) भाजपा के समय में हुआ। भाजपा ने खिलाड़ियों के उत्पीड़न का भी अलिखित रिकार्ड बनाया। भाजपा ने सबसे ज़्यादा चलती हुई, निर्वाचित सरकारें तोड़ीं।

उन्होंने कहा कि भाजपा काल में किसानों की हत्या और आत्महत्या का रिकार्ड बना है। अनाथ पशुओं से किसानों की फसल को सबसे अधिक हानि होने का रिकॉर्ड भाजपा राज में बना। भाजपा ने बेरोज़गारी का अभूतपूर्व रिकार्ड बनाया है। भाजपा ने महंगाई के पिछले सभी रिकार्ड तोड़ दिए हैं। भाजपा ने सबसे कम समय में सबसे अधिक क़ानून वापस लेने का हालिया रिकार्ड बनाया है।

श्री अखिलेश यादव की चिंता है कि महिला अपराध के मामले में प्रदेश की स्थिति भयावह है। हर दिन कहीं सामूहिक दुराचार हो रहा है तो कहीं महिलाओं और बच्चियों की हत्या हो रही है। अपराधियों में पुलिस का कोई डर नहीं है। भाजपा सरकार प्रदेश की कानून व्यवस्था ठीक करने और अपराधियों को सजा दिलाने के बजाय अपने विरोधियों और निर्दोष लोगों को झूठे मुकदमों में फंसाकर बदनाम करने को ही कानून व्यवस्था सुधारना मानती है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद में जन्माष्टमी उत्सव देखने निकली दो बच्चियों की लाशें पेड़ पर लटकी मिलना, एक बेहद संवेदनशील घटना है। इस सरकार में महिलाएं असहाय हैं। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार से आम जनता और महिलाओं का भरोसा खत्म हो गया हैं जनता मानने लगी है कि अब इस सरकार के हटने के बाद ही प्रदेश के हालात बदलेंगे।

बोले यूपी लाल टोपी

लोकसभा चुनाव में भाजपा को मिली करारी हार और समाजवादी पार्टी की शानदार जीत ने भाजपा नेताओं खासकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को बौखलाहट से भर दिया है। बौखलाहट इस कदर कि सपा के खिलाफ अनाप-शनाप बयान देने में इतिहास को भी भुलाए दे रहे हैं। तभी तो भारतीय समाज एवं राजनीति में टोपी, खास तौर पर लाल टोपी की अहम भूमिका भी इन्हें याद न रही। इतिहास से बेखबर शासकों को यह याद रखना होगा कि लाल टोपी थी, लाल टोपी है और लाल टोपी रहेगी। लाल टोपी की गौरवशाली परंपरा पर ***समाजवादी बुलेटिन*** *की खास पेशकश*

बुलेटिन ब्यूरो

लो

कसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी की शानदार जीत और भारतीय जनता पार्टी की बुरी हार ने भाजपा के नेताओं को बौखलाहट से भर दिया है। इनमें उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कुछ ज्यादा ही बौखला गए हैं। हालत यह है कि अब वह सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाषाई मर्यादाओं की परवाह नहीं कर रहे। हाल ही में उन्होंने समाजवादी पार्टी की लाल टोपी पर पर जोआपत्तिजनक टिप्पणी की है वह समाजवादी पार्टी के प्रति बढ़ते जन समर्थन से उपजी उनकी कुंठा और बौखलाहट ही है।

हालिया चुनाव नतीजों ने साफ कर दिया है कि पूरा यूपी अब अब लाल टोपी के पक्ष में बोल रहा है। इसने भाजपा नेताओं को तनावग्रस्त कर दिया है। वे जान गए हैं कि अब उनकी सत्ता जाने वाली है। यही वजह है

फाइल फोटो

कि अब तक अपने वक्तव्योंमें समाज को धर्म-जाति-नाम और परिधान के अलावा लैंगिक आधार पर समाज को बांटने वाली बयानबाजी करने वाले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अब लाल रंग और समाजवादी पार्टी की लाल टोपी पर जिस तरीके की नकारात्मक टिप्पणी की है, वह उनके द्वारा लाल रंग की सामाजिक धार्मिक महत्व पर ही सवाल उठाने जैसा है।

वे सिर्फ चिढ़ में टिप्पणियां करते रहते हैं और जनता को भड़काते रहते हैं। लेकिन धर्म आधारित राजनीति करने वालों ने कम से कम हनुमान जी की उपासना में संकटमोचक हनुमानाष्टक का यह दोहा तो सुना होगा कि *–लाल देह लाली लसै अरुधर लाल लंगूर। बज्र देह दानव दलन जय जय जय कपि सूर।* योगी आदित्यनाथ और भाजपा के नेता समाजवादी पार्टी की लाल टोपी के खिलाफलाख टिप्पणियां करें सचयह है कि यूपी की राजनीति में लाल टोपी समाजवादियों की स्थाई पहचान बन गई है। भूमंडलीकरण और ब्रांडिंग की राजनीति के दौर में भी अखिलेश यादव और उनके समाजवादी साथी बड़ी शान और मर्यादा से लाल टोपी पहनते हैं।

योगी आदित्यनाथ का लाल टोपी पर हमला भारत में समाजवादी मूल्यों और सामाजिक न्याय की राजनीति पर प्रहार है। मुख्यमंत्री और भाजपा के लोग लाल टोपी के ऐतिहासिक महत्व से न वाकिफ हैं और न ही

अपना ज्ञान बढ़ाने में उनकी कोई रुचि रहती है। लाल टोपी के आजादी की लड़ाई से लेकर अब तक के योगदान को अगर ये लोग जान जाते तो इस तरह की टिप्पणी नहीं करते।

जनता की पहली पसंद बन चुकी लाल टोपी उनकी आंखों में इसलिए भी खटक रही है कि अब लाल टोपी वाले सत्ता परिवर्तन करके ही मानेंगे। इसका एक नमूना जनता ने उन्हें लोकसभा चुनाव में दिखाया भी है। समाजवादी पार्टी को शानदार जीत देकर यूपी की जनता ने साफतौर पर संकेत कर दिया है कि 2027 में लाल टोपी ही उनकी पहली पसंद होगी।

रंग, वह भी लाल रंग से इतनी चिढ़ भाजपा की हताशा को दर्शाता है। यह हताशा ताजा नहीं है बल्कि सदियों से भाजपा और उसके अगुआ आरएसएस के लिए हमेशा से ही लाल टोपी परेशानी का सबब रही है। जय प्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति हो या मजदूर क्रांति, लाल रंग अपना एक महत्व समेटे हुए है।

मुख्यमंत्री की टिप्पणी समाजवादी पार्टी पर न होकर तमाम मजदूरों के लाल रंग की पसंद पर प्रहार है। लाल टोपी पर टिप्पणी करने से पहले ये लोग भूल गए कि जब भी मजदूरों या समाजवादियों पर प्रहार हुए हैं तो क्रांति आई है। आजादी की शानदार विरासत के वाहक समाजवादियों और लाल टोपी जैसे उनके प्रतीक चिह्नों का अपमान भारत के स्वाधीनता संग्राम का अपमान है। जो लोग ऐसा कर रहे हैं उन्हें न तो इतिहास माफ करेगा और न ही आगामी चुनाव में प्रदेश की जनता।

समाजवादी पार्टी की लाल टोपी के लाल रंग पर सियासत करने से पहले अगर रंगों के महत्व को समझ लिया जाता तो शायद यह भूल कोई समझदार व्यक्ति न करता। जिस लाल रंग पर टिप्पणी की गई है, उसका वैज्ञानिक तथ्य यह है कि लाल रंग प्रेम, उत्साह, प्रोत्साहन और गंभीरता का प्रतीक है। ऐसे ही हरा रंग उम्मीद और नई शुरुआत का प्रतीक माना गया है।

जाहिर है, समाजवादी पार्टी के संस्थापकों ने प्रेम, उत्साह, प्रोत्साहन व गंभीरता को अपनाने के लिए सिर पर लाल टोपी चुनी और झंडे में लाल के साथ हरा रंगा इसलिए जोड़ा होगा कि जनता की उम्मीदों को पूरा करना है और एक नई शुरुआत करनी है।

बदरंग हो चुकी भाजपा सरकार के मुखिया ने रंग का यह तराना छेड़ा और उनके सहयोगीभाजपा नेता इस बयान को आगे बढ़ाने लगे। बिना सोच-समझे रंग पर बहस करते भाजपा के लोग रंग का महत्व भूल गए और फंस गए हैं। असल में, मुख्यमंत्री और पूरी भाजपा को सिर्फ वोट की सियासत

जिनके जीवन में प्रेम की कमी उन्हें ही लाल रंग से बैर

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी की लाल टोपी पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की आपत्तिजनक टिप्पणी के बाद समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने ऐसा जवाब दिया कि पूरी भाजपा लाजवाब हो गई।

श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि लाल रंग' मिलन का प्रतीक होता है, जिनके जीवन में प्रेम-मिलन, मेल-मिलाप का अभाव होता है वो अक्सर इस रंग के प्रति दुर्भावना रखते हैं।' श्री यादव ने साफतौर पर कहा कि कोई रंग अच्छा या बुरा नहीं होता है बल्कि नजरिया अच्छा और बुरा हो सकता है।

श्री यादव के जवाब के बाद भाजपा ने चुप्पी साध ली क्योंकि इस जवाब को जनता ने भी बेहद पसंद करते हुए कहना शुरू कर दिया कि भाजपा को सकारात्मक राजनीति श्री अखिलेश यादव से ही सीखनी चाहिए। यह पहला मौका नहीं है जबकि श्री अखिलेश यादव के विजन की तारीफ हुई है। जनता उन्हें सकारात्मक राजनेता के रूप की वजह से ही पसंद करती है।

रंग पर की गई आपत्तिजनक टिप्पणी पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने 30 अगस्त को ट्वीट कर खूब सराहना बटोरी। उन्होंने लिखा-सच तो ये है कि हर रंग प्रकृति से ही प्राप्त होता है और सकारात्मक लोग किसी भी रंग को नकारात्मक नहीं मानते हैं।

रंगों के प्रति सकारात्मक विविधता की जगह; जो लोग नकारात्मक विघटन-विभाजन की दृष्टि रखते हैं, उनके प्रति भी बहुंरगी सद्भाव रखना चाहिए क्योंकि ये उनका नहीं, उनकी प्रभुत्ववादी एकरंगी संकीर्ण सोच का कुपरिणाम है। ऐसे लोगों के मन-हृदय को परिवर्तित करने के लिए बस इतना समझाना होगा कि 'काले रंग की अंधेरी रात के बाद ही लालिमा ली हुई सुबह' का महत्व होता है, ये पारस्परिक रंग-संबंध ही जीवन में आशा और उत्साह का संचार करता है।

उन्होंने कहा कि रंगों का मन-मानस और मनोविज्ञान से गहरा नाता होता है। यदि कोई रंग किसी को विशेष रूप से प्रिय लगता है तो इसके विशेष मनोवैज्ञानिक कारण होते हैं और यदि किसी रंग को देखकर कोई भड़कता है तो उसके भी कुछ नकारात्मक मनोवैज्ञानिक कारण होते हैं।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि 'लाल रंग' मिलन का प्रतीक होता है। जिनके जीवन में प्रेम-मिलन, मेल-मिलाप का अभाव होता है वो अक्सर इस रंग के प्रति दुर्भावना रखते हैं। श्री यादव के अनुसार लाल रंग शक्ति का धारणीय रंग है, इसीलिए कई पूजनीय शक्तियों से इस रंग का सकारात्मक संबंध है लेकिन जिन्हें अपनी शक्ति ही सबसे बड़ी लगती है वे लाल रंग को चुनौती मानते हैं। इसी संदर्भ में ये मनोवैज्ञानिक-मिथक भी प्रचलित हो चला कि इसी कारण शक्तिशाली सांड भी लाल रंग देखकर भड़कता है।

करनी आती है। नाम-पहनावा को लेकर समाज को बांटने की उनकी सियासत जगजाहिर है।

अतीत देखा जाए तो पता चल जाएगा कि भाजपा हमेशा ही समाज को बांटने वाला ही काम करती रही है। यह वही भाजपा है जिसके वरिष्ठ नेता भी कभी कह चुके हैं कि वह पहनावा से जान लेते हैं कि अमुक शख्स किस धर्म का है जिसे लेकर दुनिया में उनकी आलोचना हो चुकी है मगर ये लोग बाज आने वाले नहीं हैं। कभी इन लोगों को जिलों का नाम पसंद नहीं आता तो कभी कोई रेलवे स्टेशन के नाम से उन्हें नफरत होती रहती है और ये उसका नाम बदलने में जुट जाते हैं।

अभी हाल में ही व्यापारियों खासतौर पर ठेले-खुमचे ढ़ाबों वालों से दुकानदार का नाम लिखने का आदेश देकर भाजपा घिर चुकी है और सुप्रीम अदालत के हस्तक्षेप के बाद भाजपा सरकार को अपने कदम खींचने पड़े मगर इन सबके बावजूद उनपर असर पड़ता नहीं दिख रहा। यही वजह है कि अब वे रंगों में अपनी बदरंग राजनीति दिखाने में जुट गए हैं।

लाल टोपी पर निशाना साधकर मुख्यमंत्री व भाजपा ने PDA को और एकजुट कर दिया है। जाहिर है, 2027 में यूपी की जनता श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी की सरकार चाहती है। वह भाजपा की बांटने वाली राजनीति का रंग 2027 में बदरंग करने जा रहे है।

2027 का लक्ष्य भाजपा का सफाया

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी ने 2027 के विधानसभा चुनाव के लिए तैयारियां तेज कर दी हैं। बूथ स्तर पर कमेटियों को और मजबूत करने के लिए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव लगातार बैठकें कर लक्ष्य-2027 को भेदने के लिए समीक्षा कर रहे हैं और कार्यकर्ताओं में भाजपा का सफाया करने के लिए जोश भर रहे हैं।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि 2027 के विधानसभा चुनाव में भाजपा का सफाया करना एकमात्र लक्ष्य है। यह उत्तर प्रदेश की जनता के हित में हैं। भाजपा की नकारात्मक

राजनीति ने प्रदेश का बहुत नुकसान किया है। इस नुकसान की भरपाई करने का काम समाजवादी सरकार की सकारात्मक नीतियां करेंगी।

बैठकों में यूपी भर से आए जिलों के कार्यकर्ता व वरिष्ठ नेता संकल्प ले रहे हैं कि वे प्राणपण से जुटकर 2027 के विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाएंगे। समाजवादी पार्टी का लक्ष्य बड़ा है इसलिए सभी एकजुट होकर समाजवादी पार्टी की नीति-कार्यक्रमों को घर-घर, गांव-गांव पहुंचाने तक चैन से नहीं बैठेंगे।

समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय पर पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की बैठकों का सिलसिला लगातार जारी है और वह बता रहे हैं कि लक्ष्य-2027 के लिए किस तरह सावधानी के साथ भाजपा का मुकाबला करना है। वे बता रहे हैं कि उपचुनाव की तैयारी तो करनी है पर 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव में बूथ स्तर तक संगठन को मजबूती देकर पूरी सावधानी से भाजपा का मुकाबला करना है। आम जनता और कार्यकर्ताओं के बल पर सन् 2027 में भाजपा की विदाई तय है।

2 2 अगस्त को राज्य मुख्यालय पर कार्यकर्ताओं के साथ बैठक करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि जनता ने लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी का साथ दिया, अब भविष्य की तैयारी का समय है। देश में भाजपा को रोकने की ताकत समाजवादी पार्टी में है। उन्होंने कहा कि भाजपा के कारण संविधान खतरे में है। वह आरक्षण लागू नहीं करना चाहती है इसलिए समाजवादी पार्टी की लड़ाई खत्म नहीं हुई है। भविष्य में नई पीढ़ी के लिए काम करना ही होगा।

श्री यादव ने कहा कि पीडीए से भाजपा घबराई हुई है इसलिए वह षडयंत्र करने से बाज नहीं आ सकती है। समाजवादी पार्टी के नेतृत्व को बदनाम करने और निर्दोषों को झूठे मुकदमों में फंसाने का काम भाजपा कर रही है। श्री अखिलेश यादव ने आह्वान किया कि प्रदेश में 2027 में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने में कोई कसर नहीं छोड़नी है। समाजवादी पार्टी की सरकार बनने पर ही जीवन में बदलाव आएगा और गांव की तस्वीर में भी परिवर्तन आएगा।

28 अगस्त को कार्यकर्ताओं से मुखातिब श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा ने सरकार में रहते हुए उत्तर प्रदेश में तो कोई विकास किया नहीं, दूसरे के कामों पर दावा ठोंकने में उसे कोई शर्म नहीं आती है। अब जनता ने इस भाजपा सरकार के जाने का समय तय कर लिया है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि कार्यकर्ता

साथियों को उत्तर प्रदेश में सतर्क और जागरूक रहना है। आगामी 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले 10 विधानसभा उपचुनाव में भाजपा का सफाया होगा। उत्तर प्रदेश की जनता 2027 में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने को संकल्पित हैं।

29 एवं 30 अगस्त को पार्टी कार्यालय पर कार्यकर्ताओं की बैठक को संबोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव में बूथ स्तर तक संगठन को मजबूती देकर पूरी सावधानी से भाजपा का मुकाबला करना है।

3 सितंबर की बैठक में श्री अखिलेश यादव ने कहा कि 2027 के विधानसभा चुनाव में भाजपा का सफाया होगा और देश की राजनीति उसके चुनावी परिणाम से प्रभावित होगी। जनता 2027 में उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार को बेदखल कर सत्ता में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने के लिए संकल्पित है।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा की राजनीति को निष्प्रभावी बनाने में पीडीए एक सशक्त भरोसा साबित हुआ है। संविधान और आरक्षण के मुद्दे को और धार देना हैं। सामाजिक न्याय के लिए जातीय जनगणना का होना आवश्यक है। समाजवादी पार्टी इन्हीं मुद्दों को लेकर जनता के बीच जा रही है। समाजवादी पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता भाजपा के मंसूबों को कभी भी पूरा नहीं होने देगा। जनता समझ रही है कि उसको समाजवादी सरकार बनने पर ही तमाम समस्याओं से छुटकारा मिल सकेगा।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी कार्यकर्ताओं को और भी ज्यादा मेहनत से जुटे रहना हैं। समाजवादी पार्टी विकास के लिए प्रतिबद्ध है। उसका मानना है कि किसान खुशहाल होगा और नौकरी रोजगार के रास्ते खुलेंगे तभी विकास सार्थक होगा।

सबको भा रहा सपा का साथ

बुलेटिन ब्यूरो

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को लाल टोपी से भले ही चिढ़ हो मगर यूपी के साथ ही देश के दूसरे राज्यों की जनता को समाजवादी पार्टी की लाल टोपी का साथ पसंद आ रहा है। यूपी के साथ ही देश के दूसरे राज्यों में सभी वर्ग के लोगों के बीच समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर विभिन्न क्षेत्रों के लोग सपा की सदस्यता ले रहे हैं।

9 सितंबर को लखनऊ स्थित सपा के राज्य कार्यालय में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व पर आस्था जताते हुए महाराष्ट्र एनसीपी (अजीतगुट) के दर्जनों पदाधिकारी एनसीपी के राज्य महामंत्री इरशाद भाई जागीरदार के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए।

सपा में शामिल होने वालों में एनसीपी अजीतगुट के राज्य महामंत्री इरशाद भाई जागीरदार, प्रदेश सचिव नरेन्द्र भाई चौहान, प्रदेश सचिव सामाजिक न्याय महेन्द्र दादा सिरसात, नगर अध्यक्ष कैलाश भाई चौधरी, महिला जिलाध्यक्ष जयाताई सालोके, युवा अध्यक्ष तेजस रण सिंह, सामाजिक न्याय जिलाध्यक्ष राहुल पोल आदि प्रमुख रहे।

समाजवादी पार्टी में शामिल होने वाले एनसीपी नेताओं ने कहा कि महाराष्ट्र में सपा की बड़ी पहचान है। श्री अखिलेश यादव की लोकप्रियता का कोई मुकाबला नहीं। सभी उनके नेतृत्व के प्रशंसक हैं और उन पर सभी को भरोसा है। इस बार इंडिया गठबंधन की महाराष्ट्र में सरकार बनेगी।

श्री अखिलेश यादव ने एनसीपी नेताओं को समाजवादी पार्टी में शामिल होने पर बधाई देते हुए उम्मीद जताई कि इनके आने से समाजवादी पार्टी को मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी सामाजिक न्याय की लड़ाई शुरू से ही लड़ती आई है। जातीय जनगणना की मांग पूरी होने पर ही समानुपातिक भागीदारी तय हो सकेगी और सभी को हक तथा सम्मान मिलेगा। भाजपा आरक्षण समाप्त करने का कुचक्र कर रही है।

दूसरी तरफ, क्रांति दिवस 9 अगस्त से

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के आह्वान पर यूपी भर में चले छात्र, नौजवान पीडीए जागरूकता अभियान में यूपी के जिलों-महानगरों व कस्बों व गांवों में बड़ी संख्या में युवाओं ने समाजवादी पार्टी की सदस्यता ली और लाल टोपी पहनकर मिशन 2027 में समाजवादी सरकार बनाने का संकल्प लिया।

अभियान के दौरान लाल टोपी पहनकर निकले नौजवानों का समाज के सभी वर्ग ने स्वागत किया और अन्याय व अत्याचार के खिलाफ खड़े होने की समाजवादी पार्टी की नीति की सराहना की।

मुलायम सिंह यादव यूथ ब्रिगेड के राष्ट्रीय अध्यक्ष सिद्धार्थ सिंह की अगुआई में कपिलवस्तु विधानसभा सिद्धार्थनगर में दलित व अनुसूचित भाइयों के बीच सदस्यता अभियान चलाया गया।

बरेली में मुलायम सिंह यूथ बिग्रेड रविंद यादव राष्ट्रीय महासचिव अरविंद यादव के नेतृत्व में बरेली के कोचिंग सेंटर में पहुंचकर छात्रो युवाओं से वार्ता कर उन्हें जागरुक किया गया। यहां बड़ी संख्या में छात्रों ने समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। आगरा में फतेहाबाद विधानसभा के ग्राम चरपुरा में पीडीए छात्र नौजवान जन चौपाल लगाई गई। रामवीर सिंह निषाद की अगुआई में लगी जनचौपाल में युवाओं ने समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

शामली में भी छात्र नौजवान पीडीए जागरूकता सदस्यता अभियान के तहत थाना भवन विधानसभा के अध्यक्ष तफरूज राव के कैंप कार्यालय पर समाजवादी पार्टी छात्र सभा के जिलाध्यक्ष भूपेंद्र सैनी के नेतृत्व में सदस्यता अभियान चलाया गया।

झांसी में अग्रसेन महाविद्यालय मऊरानीपुर में अभियान में लोहिया वाहिनी के प्रदेश उपाध्यक्ष राकेश यादव व छात्र सभा प्रदेश उपाध्यक्ष स्वदेश यादव ने अभियान का नेतृत्व किया और सैकड़ों छात्र-छात्राओं को सदस्यता दिलाई। आगरा में सन्त रामकृष्ण कन्या महाविद्यालय व राजकीय आईटीआई कालेज, बालकेश्वर में सदस्यता अभियान राष्ट्रीय उपाध्यक्ष केके यादव ने छात्र, छात्राओं को सदस्यता दिलाई।

सीतापुर के महमूदाबाद में स्थित राम नरेश इंटर कालेज बजेहरा सीतापुर के परिसर में जागरूकता अभियान का कार्यक्रम आयोजित किया गया। देवरिया में सदर विधानसभा के रामपुर गौरी बाजार में ब्लॉक अध्यक्ष संदीप यादव सोनू के नेतृत्व में सैकड़ों युवाओं ने समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। वाराणसी में महारानी बनारस डिग्री कॉलेज में चंद्रशेखर यादव ने नौजवानों व छात्रों को सदस्यता दिलाई।

उत्तर प्रदेश के सभी जिलों में उत्साह के साथ अभियान चलाया गया जिसमें मंहगाई, बेरोजगारी, पेपर लीक आदि के मुद्दों पर युवाओं ने नाराजगी का इजहार करते हुए समाजवादी सरकार में युवाओं, छात्रों के लिए किए गए बेहतरीन कामों को याद किया और उत्साह के साथ समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

अखिलेश को मिला विजयी भव का आशीर्वाद

बुलेटिन ब्यूरो

सभी धर्मों, समुदायों का समान भाव से आदर-सम्मान करने के लिए प्रसिद्ध समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव को अयोध्या धाम के 106 वर्षीय श्रद्धेय श्री राम शरणाचार्य जी का विजयी भव का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

26 अगस्त को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने राजधानी लखनऊ में सैनिक सोसायटी सरोजनीनगर क्षेत्र के शान्ति सदन जाकर अयोध्या धाम के श्रद्धेय श्री राम शरणाचार्य जी से भेंट कर उनका आशीर्वाद लिया। आचार्य जी बद्रीनाथ क्षेत्र में भी प्रवास करते हैं।

श्री राम शरणाचार्य जी ने श्री अखिलेश यादव को विजय श्री का आशीर्वाद देते हुए उन्हें स्वच्छ छवि का बड़ा नेता बताया और कहा कि उनकी सफलता का समय शुरू हो रहा है, वे देश के सर्वोच्च पद तक जल्द ही पहुंचेंगे। श्रद्धेय श्री राम शरणाचार्य जी ने कहा कि वैसे तो उन्हें पहले ही सर्वोच्च पद पर पहुंचना था पर अब कोई उनका रास्ता नहीं रोक पायेगा। उनके हाथों में देश सुरक्षित रहेगा। देश को श्री अखिलेश यादव की

आवश्यकता है। श्री अखिलेश यादव के साथ पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री राजेन्द्र चौधरी व अयोध्या के पूर्व विधायक पवन पांडेय ने भी आशीर्वाद लिया।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने आला हजरत इमाम अहमद रजा खां (आले रहमा) के उर्स मुबारक के मौके पर दरगाह पर चादर पेश करने के लिए भेजी। यह उर्स 29, 30 व 31 अगस्त को हुआ। श्री अखिलेश यादव ने दरगाह आला हजरत पर चादर पेश करने की जिम्मेदारी प्रदेश महासचिव एवं विधायक अताउर रहमान को सौंपी और उर्स आला हजरत की मुबारकबाद दी। दरगाह के लिए चादर रवाना करने के अवसर पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी, खानकाह के ताजुश्शरिया के कोर कमेटी सदस्य हाफिज इकराम रजा खां, शमीम अहमद, कौसर अली और काजी जरीफ आदि मौजूद रहे।

एक अन्य कार्यक्रम में28 अगस्त को सिख समाज के एक प्रतिनिधिमंडल ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव से मुलाकात कर उन्हें एक ज्ञापन सौंपा जिसमें सरदार सुखदेव सिंह, सरदार भूपिन्द्र सिंह और सरदार बलविन्दर सिंह ने उत्तर भारत के ऐतिहासिक गुरूद्वारा श्री नानकमत्ता साहिब की प्रबंध कमेटी के चुनाव में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री द्वारा दखलंदाजी के खिलाफ श्री अखिलेश यादव से अपने प्रभाव के इस्तेमाल का आग्रह किया।

ज्ञापन में सिख समाज द्वारा बताया गया कि गुरूद्वारा श्री नानकमत्ता साहिब उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड का सबसे बड़ा और गुरू नानक साहिब और गुरू हरगोबिन्द साहिब जी से संबंधित एक ऐतिहासिक गुरूद्वारा है। गुरूद्वारा श्री नानकमत्ता साहिब पर उत्तराखंड के मुख्यमंत्री और भाजपा सरकार ने गुरूद्वारा प्रबंध कमेटी के अध्यक्ष सरदार हरबंस सिंह चुघ पूर्व आईएएस अधिकारी को मजबूत बहुमत प्राप्त होने के बावजूद अध्यक्ष पद से हटवा दिया है और गुरूद्वारा प्रबंध कमेटी के ऊपर अपने चहेतों का कब्जा करवाकर सिखों के गुरूद्वारे पर सीधे रूप से कब्जा कर लिया गया है।

ज्ञापन में श्री अखिलेश यादव के प्रति विश्वास जताया गया है कि वे अन्याय का सामना कर रहे समुदाय की बुलंद आवाज बनकर अन्याय के खिलाफ खड़े होकर लड़ाई में साथ देंगे।

PDA के सवालों का प्रहार तय है भाजपा की हार

बुलेटिन ब्यूरो

लोकसभा चुनाव में एकता की ताकत दिखा चुके PDA ने अब 2027 में भाजपा को सत्ता से बेदखल करने की तैयारी शुरू कर दी है। यूपी की सत्ता में 7 साल से काबिज भाजपा से लोकतांत्रिक ढंग से हिसाब किताब करने के लिए PDA ने अब भाजपा सरकार व संगठन के पदाधिकारियों को घेरने के लिए सवालों की फेहरिस्त तैयार की है जो भाजपाइयों को चुभ रही है। PDA ने सवालों की जो सूची तैयार की है वह दरअसल वही वादे हैं जिनका प्रचार कर भाजपा सत्ता में आई और एक भी वायदा पूरा नहीं किया। इन सवालों का भाजपा के पास कोई जवाब नहीं है। यही वजह है कि भाजपा कार्यकर्ता अब जनता के पास जाने से कतराने लगे हैं। उनमें डर बैठ गया है कि अगर वे जनता के बीच गए और उसने घेरकर सवालों की झड़ी लगा दी तो वे जवाब क्या देंगे। प्रस्तुत है PDA के सवालों की सूची और समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री अखिलेश यादव** का वक्तव्य:

PDA के सवाल

- ⇨ छुट्टा जानवरों से निजात दिलवाने का झूठा वायदा क्यों किया?
- ⇨ काले क़ानून लाकर किसानों की भूमि क्यों हड़पनी चाही?
- ⇨ किसानों पर गाड़ी क्यों चढ़वाई?
- ⇨ किसानों को लाभकारी एमएसपी क्यों नहीं दिया?
- ⇨ संविधान की समीक्षा और उसे बदलने की बात क्यों की?
- ⇨ 69000 में आरक्षण का हक़ क्यों मारा?
- ⇨ आरक्षण का हक़ मारते हुए पिछले दरवाज़े से लेटरल भर्ती का षडयंत्र क्यों रचा?
- ⇨ नौकरियों की जगह संविदा की व्यवस्था लाकर आरक्षण का अधिकार क्यों छीना?
- ⇨ अग्निवीर सैन्य भर्ती लाकर युवाओं का भविष्य बर्बाद क्यों किया?
- ⇨ पुलिस भर्ती में हेराफेरी क्यों की?
- ⇨ नीट व अन्य पेपर लीक क्यों कराए?
- ⇨ पैसेवालों को लाभ पहुंचाने के लिए महंगाई को बेतहाशा बढ़ने क्यों दिया?
- ⇨ हर एक के खाते में 15 लाख रुपये देने का महाझूठ क्यों बोला?
- ⇨ नोटबंदी व जीएसटी से काम-कारोबार तबाह क्यों किया?
- ⇨ नज़ूल व वक़्फ़ भूमि को हड़पने की कोशिश क्यों की?
- ⇨ लाखों लोगों के घर-मकान-दुकान पर बुलडोज़र क्यों चलवाया?
- ⇨ ज़मीनों का सही मुआवज़ा क्यों नहीं दिया?
- ⇨ महिला का शोषण करने वालों को राजनीतिक प्रश्रय क्यों दिया?
- ⇨ मज़दूरों की मज़दूरी में बढ़ोत्तरी क्यों नही की?
- ⇨ ग़रीबों के नाम पर चल रही योजनाओं में भ्रष्टाचार क्यों होने दिया?
- ⇨ प्रेस के साथ अभिव्यक्ति की आज़ादी का गला घोंटने के लिए क़ानून क्यों लाए?
- ⇨ बैंकों में पेनल्टी लगाकर जनता की बचत का पैसा क्यों हड़पा?
- ⇨ शिक्षा और सेहत को निजी हाथों में देकर महंगा क्यों किया?
- ⇨ समाज के प्रेम, सौहार्द, भाईचारे को ख़त्म करने की

जहां जाओगे, सवाल पाओगे

-अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि अब जब भाजपा के संगी-साथी कह रहे हैं कि वे बूथ पर जाकर व्यवस्था संभालेंगे तो इसका मतलब साफ़ है कि वे लोकसभा चुनाव में हुई ऐतिहासिक पराजय को देखते हुए ये मानकर चल रहे हैं कि भाजपा का कार्यकर्ता हताश होकर बूथ छोड़कर भाग चुका है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि अब भाजपा के मुखौटाधारी केवल सत्ता लोलुप संगी-साथियों को भाजपा के कार्यकर्ताओं पर भरोसा नहीं रहा है। उन्होंने कहा कि जब भाजपाई जाएंगे तो उन्हें PDA के सवालों का जवाब देना होगा। जहां जाएंगे, जनता उनसे यह सवाल पूछेगी।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि दरअसल चुनावी हार के बाद भाजपाई गुटों ने आपस में विश्वास खो दिया है। इसका एक और पहलू यह भी है कि भाजपा का 'संगी-साथी' पक्ष ये दिखाना चाहता है कि हार का कारण वह नहीं था, वह तो अभी भी शक्तिशाली हैं, कमज़ोर तो भाजपा हुई है।

इन दोनों ही परिस्थितियों में यह तो साबित होता है कि भाजपाइयों ने हार स्वीकार कर ली है और अब भविष्य के लिए बेहद चिंतित हैं, लेकिन आपस में दोषारोपण करके, न तो ये एक-दूसरे का भरोसा जीत पाएंगे और न ही कोई आगामी चुनाव। बांटने की राजनीति करनेवाले लोग ख़ुद बंट गए हैं।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा अपनी तथाकथित चाणक्य नीति के तहत जिन 'पन्ना प्रमुखों' की बात करती थी, अब क्या वे इतिहास बन गए? आज अगर वे उपलब्ध नहीं हैं तो उसके पीछे कुछ महत्वपूर्ण कारण हैं। अब भाजपा के जो गिने-चुने कार्यकर्ता बाक़ी हैं, वे यह सोचकर हताश हैं कि वर्तमान परिस्थिति में जबकि समाज का 90 प्रतिशत PDA समाज जाग उठा है और PDA की बात करने वालों के साथ खड़ा है तो फिर वे किसके पास जाकर वोट मांगे?

उन्होंने कहा कि ऐसे भूतपूर्व भाजपाई पन्ना प्रमुख ये सच्चाई भी जान चुके हैं कि भाजपा में किसी की कोई सुनवाई नहीं है तो ऐसे दल में रहकर कभी भी कोई मान-सम्मान-स्थान उन्हें मिलने वाला नहीं है। वे ऐसे दलों की सच्चाई भी जान चुके हैं जो भाजपा की राजनीति के मोहरे बनकर काम कर रहे हैं।

वे देख रहे हैं कि जनता अब PDA की एकता और एकजुटता के साथ है क्योंकि PDA की सकारात्मक राजनीति लोगों को जोड़ती है और जनता के भले के लिए राजनीति को एक सशक्त माध्यम मानती है इसीलिए समाज का अंतिम पंक्ति में खड़ा सर्वाधिक प्रताड़ित और शोषित-वंचित समाज भी PDA में ही अपना भविष्य देख रहा है। आज़ादी के बाद सामाजिक-मानसिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्यों में PDA सर्वाधिक शक्तिशाली और सफल क्रांतिकारी आंदोलन बनकर उभरा है।

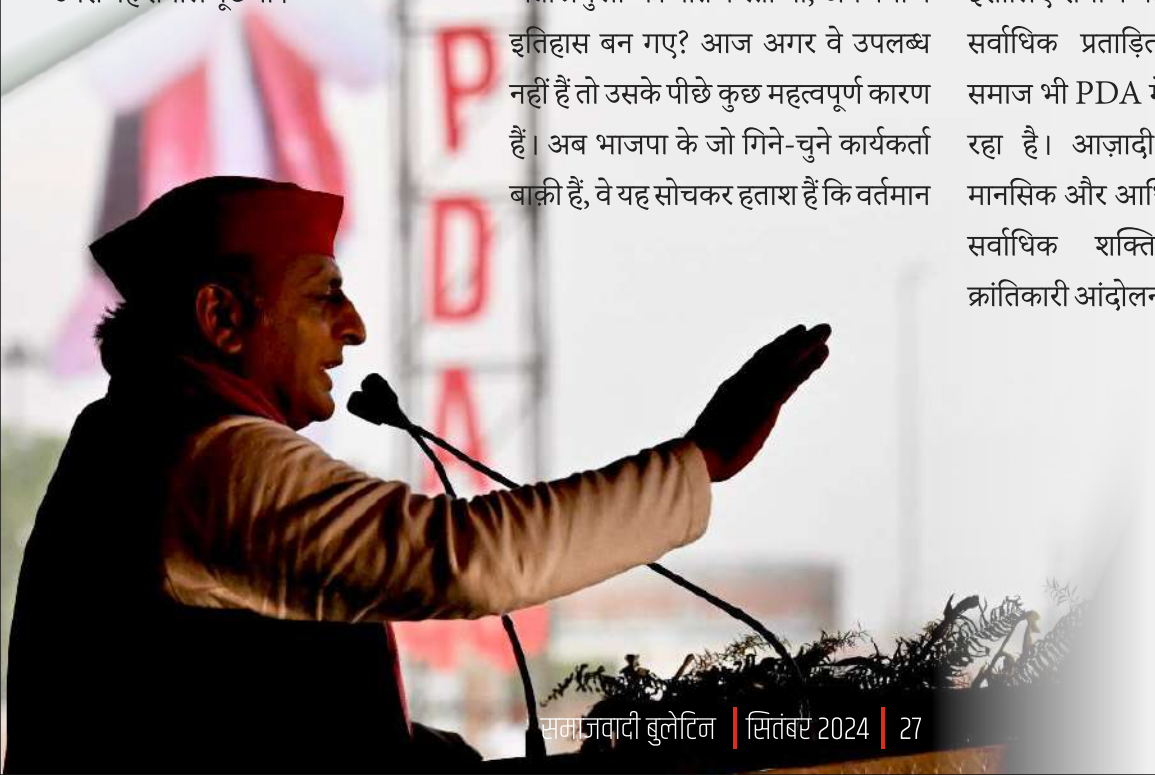

लाल टोपी देश की शान

अरुण कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने समाजवादियों पर फिर कटाक्ष किया है। हालांकि समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने उन्हें इसका माकूल जवाब दे दिया है लेकिन यह बात प्रदेश के नागरिकों को मालूम होनी चाहिए कि लाल टोपी वाले समाजवादियों की क्या विरासत है। इसी के साथ यह भी मालूम होना चाहिए कि काली टोपी पहन कर शाखा लगाने वाले राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की क्या विरासत है और क्या इतिहास है।

योगी जी का यह कथन इतिहास सम्मत नहीं है कि लाल टोपी वालों का इतिहास काला है। बल्कि इसके विपरीत यह बात ज्यादा सही है कि काली टोपी वालों का इतिहास काला है। सोशलिस्ट पार्टी जब तक कांग्रेस पार्टी के भीतर रहकर आजादी और समाजवाद लाने के लिए काम करती थी तब तक उसके नेता गांधी टोपी पहनते थे। गांधी जी ने वह टोपी कहीं बाहर से आयात नहीं की। उन्होंने वह टोपी भारत की ही धरती से उठाई।

आप महाराष्ट्र में जाकर देख लीजिए आज भी वहां लोग सफेद टोपी पहनते हैं। टोपी, पगड़ी या सिर पर गमछा बांधने की परंपरा इस देश में पुरानी है। स्वतंत्रता संग्राम में टोपी आजादी के जज्बे का निशान बन गई। भगत सिंह के चाचा अजित सिंह ने पगड़ी संभाल जट्टा नाम से किसानों का बड़ा आंदोलन चलाया था। वही भगत सिंह जिन्हें लाल रंग बहुत पसंद था। जिनकी 23 मार्च को होने वाली शहादत के कारण डॉ लोहिया अपना जन्मदिन नहीं मनाते थे। बाद में उन्हीं भगत सिंह की बहन सोशलिस्ट पार्टी में सक्रिय थीं। इस तरह समाजवादियों की विरासत तो गांधी और भगत सिंह की साझी विरासत है।

लाल रंग उगते सूरज का रंग है। लाल रंग युवा जोश का प्रतीक है। लाल रंग बदलाव का रंग है। लाल रंग क्रांति का रंग है। लाल रंग मजदूरों का रंग है। भारत की सांस्कृतिक परंपरा में भी जगह जगह लाल रंग दिखता है।

सन 1947 में जब देश विभाजित हुआ और 1948 में गांधी की हत्या हो गई तो समाजवादी लोग कांग्रेस से बाहर निकल आए। उनका उद्देश्य देश में समाजवाद लाना था। उनका उद्देश्य विभाजन के कारण जो हिंदू मुस्लिम खाई बनी थी उसे मिटाना था। इसलिए समाजवादियों ने अपने प्रतीक चुने। जयप्रकाश नारायण 1948 में जब रूस गए तो उन्होंने तय किया कि समाजवादियों को लाल रंग का इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि दुनिया में लाल रंग बराबरी की दिशा में एक खास बदलाव ला रहा है। हालांकि समाजवादियों ने कभी भी सोवियत संघ की तरह नागरिक अधिकारों का दमन बर्दाश्त नहीं किया। वे नागरिक स्वतंत्रता से खुले समर्थक थे। डॉ लोहिया ने पंडित नेहरू के कहने पर 1934 में नागरिक स्वतंत्रता पर एक महत्त्वपूर्ण पुस्तिका तैयार की थी जो आज भी प्रासंगिक है। समाजवादियों ने गांधी का जिस तरह से आदर किया और उनसे निरंतर संवाद किया उससे गांधी अपने जीवन के आखिरी दिनों में समाजवाद के प्रति झुक रहे थे।

यह समाजवाद और गांधी के विचारदर्शन का ही प्रभाव था कि आजाद भारत में न सिर्फ मजदूर नेता जार्ज फर्नांडीस ने संसद में निजी विधेयक के तौर पर ट्रस्टीशिप का बिल पेश किया बल्कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक रहे और जनसंघ के नेता अटल

बिहारी वाजपेयी ने भी वैसा ही विधेयक पेश किया। वह निजी सदस्य विधेयक था इसलिए पारित होने का सवाल नहीं पैदा होता था लेकिन वह पेश हुआ और उसका महत्त्व भारत के संसदीय इतिहास में दर्ज है।

यह समाजवादियों का ही प्रभाव था कि जब जनता पार्टी का विघटन हुआ और जनसंघियों ने 1980 में नई पार्टी का गठन किया तो उन्होंने अपना उद्देश्य `गांधीवादी समाजवाद' रखा। उन्होंने अपना पुराना नाम जनसंघ नहीं अपनाया।

लेकिन इस दौरान राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने जयप्रकाश नारायण को दिया वचन भंग किया। जयप्रकाश नारायण चाहते थे कि संपूर्ण क्रांति आंदोलन की गंगा में नहाने के बाद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अपने पाप धो ले। वह अपने को समावेशी बनाए और अपनी फासिस्ट विचारधारा त्याग दे। वे चाहते थे कि संघ अपने दरवाजे अल्पसंख्यक समुदाय और मुसलमानों के लिए खोल दे। वह स्त्रियों को भी अपने संगठन में उचित स्थान दे। साथ ही वह सांप्रदायिक सोच से मुक्त हो जाए। उन्होंने जनता पार्टी में शामिल होने के लिए जो शर्त रखी थी कि वह भी महत्त्वपूर्ण थी। उनका कहना था कि दोहरी सदस्यता छोड़नी चाहिए। यानी जो व्यक्ति जनता पार्टी में रहे वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्य न रहे। संघ के लोगों ने जेपी को आश्वासन देने के बाद भी उनकी बात नहीं मानी। उसी के कारण जनता पार्टी टूट गई।

वास्तव में लाल टोपी वालों का इतिहास संघर्ष, समर्पण, ज्ञान, और नैतिकता का इतिहास है। उनका इतिहास न तो गांधी को धोखा देने का है और न ही अंबेडकर को धोखा देने का है। उनका इतिहास स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लेने का है और सामाजिक क्रांति का आह्वान करने का है। उनकी लाल टोपी इसी नैतिकता, ईमानदारी, सादगी और क्रांति का प्रतीक है। वे जितने भारतीय हैं उतने ही वैश्विक हैं। लेकिन वे काली टोपी और खाकी नेकर पहनने वालों की तरह से न तो मुसोलिनी के इटली से प्रभावित हैं और न ही हिटलर की जर्मनी से।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की प्रेरणा रहे डॉ बालकृष्ण शिवराम मुंजे (बीएस मुंजे) जो हिंदू महासभा के नेता थे, 1931 में इटली गए और इटली के प्रधानमंत्री बेनितो मुसोलिनी से मिले। उन्होंने इटैलियन युथ फासिस्ट आर्गनाइजेशन और ओपरा नाजिओनेल बलिला का निरीक्षण किया। वे

मुसोलिनी के संगठन थे जो राष्ट्रवाद के नाम पर युवाओं को सैनिक प्रशिक्षण और हिंसा की शिक्षा दे रहे थे। वह मॉडल उन्हें बहुत पसंद आया और उन्होंने भारत लौटकर नासिक में भोंसाला मिलिट्री स्कूल की स्थापना की। बाद में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने इसी मॉडल को अपनाया और खाकी पैंट और काली टोपी संघ के कार्यकर्ताओं को पहनाई।

मुंजे गांधी के अहिंसा के सिद्धांत और उनके सेक्यूलर या सर्वधर्म समभाव के दर्शन से असहमत थे और इसीलिए उन्होंने आजादी के आंदोलन में हिस्सा लेना छोड़ दिया और फिर हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए काम करने लगे। इसी बीच 1925 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना हुई जो अब अपने सौ साल पूरे कर रहा है।

काली टोपी वाले असहयोग आंदोलन के बाद कभी आजादी की लड़ाई में नहीं उतरे। एक ओर उनके विचार पुरुष विनायक दामोदर सावरकर अंग्रेजों से माफी मांग कर अंडमान की सेल्यूलर जेल से बाहर आ गए थे तो दूसरे उनके संगठन पुरुषों ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसा संगठन खड़ा कर दिया था। वे सब अंग्रेजों से सहयोग करते हुए देश के लिए नहीं बल्कि हिंदुओं के हित के लिए काम कर रहे थे। जाहिर सी बात है इस उद्देश्य में हिंदुओं के हित से ज्यादा मुसलमानों का

फाइल फोटो

फाइल फोटो

विरोध करना और उन्हें दबाना और दूसरे दर्जे का नागरिक बनाने का एजेंडा था।

काली टोपी वालों का इतिहास एक ओर साम्राज्यवादियों से सहयोग करते हुए अपने देश के नागरिकों से लड़ना और देश में पेशवाशाही कायम करने के लिए अभियान चलाना था तो दूसरी ओर लाल टोपी वालों का इतिहास एक ओर गोरे अंग्रेजों से लड़ने और उसके बाद काले अंग्रेजों से लड़ने का है। लाल टोपी वालों का उद्देश्य समतामूलक समाज बनाना है और वही संविधान का भी उद्देश्य है। लाल टोपी वाले सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय दिलाने वाले हैं और धर्मनिरपेक्षता की परंपरा को कायम करने वाले हैं।

समाजवादियों ने आगे बढ़कर महात्मा गांधी का आजादी की लड़ाई में साथ दिया तो सामाजिक क्रांति की लड़ाई में डा भीमराव अंबेडकर से हाथ मिलाने का भी प्रयास किया। डा लोहिया तो पेरियार से भी जेल में मिलने गए थे और राष्ट्रीय प्रतीकों का विरोध त्यागकर जाति व्यवस्था के खात्म के लिए काम करने का आह्वान किया था।

अगर आधुनिक भारतीय इतिहास को खंगालेंगे तो डा राम मनोहर लोहिया ऐसे विचारक हैं जो गांधी और डा अंबेडकर के बीच पुल बनकर खड़े हैं। वे चाहते थे कि भारत से अंग्रेजी साम्राज्य विदा हो और साथ में जाति व्यवस्था टूटे। इसी के साथ भारत के गौरव के साथ मुसलमानों से भाईचारा कायम हो। वे विभाजन के प्रभाव को मिटाने के लिए गांधी से प्रेरणा लेकर भारत पाक महासंघ बनाने का भी प्रयास कर रहे थे। जाति व्यवस्था को नष्ट करने के बारे में डॉ राम मनोहर लोहिया के विचार डॉ अंबेडकर को दी गई श्रद्धांजलि से प्रकट होती हैं।

डॉ लोहिया ने साफ शब्दों में कहा था कि मेरा मानना है कि इस देश में डॉ अंबेडकर, गांधी के बाद सबसे बड़े भारतीय थे। उनके रहते

हुए यह लगता था कि एक दिन भारत से जाति व्यवस्था समाप्त हो सकती है। लेकिन संयोग से वैसा हो न सका। इसके ठीक विपरीत राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने कभी भी जाति व्यवस्था को तोड़ने की बात नहीं की। आज भले केरल में हुए सम्मेलन ने संघ ने जाति जनगणना का समर्थन किया है लेकिन यह कहीं नहीं कहा कि जाति व्यवस्था टूटनी चाहिए। उल्टे उन्होंने एक राइडर यह लगा दिया है कि इस पर राजनीति नहीं होनी चाहिए। आखिरकार जब जाति के आंकड़े आएंगे तो आरक्षण को बढ़ाने के सवाल पर राजनीति क्यों नहीं होगी। समाज मे उसकी हलचल होगी और समाज बदलेगा। लेकिन वे समाज को बदलने का विरोध करते हैं। इसलिए वे डॉ अंबेडकर को प्रातः स्मरणीय बताते हुए भी वे उनके जाति के समूल विनाश नामक पुस्तक का जिक्र नहीं करते।

जयप्रकाश नारायण और डॉ लोहिया ने भले बाद में जनसंघ के नेता दीनदयाल उपाध्याय और अटल बिहारी वाजपेयी, नानाजी देशमुख और लालकृष्ण आडवाणी से सहयोग किया हो लेकिन उन्होंने संघ की संकीर्णता और सांप्रदायिकता की सदैव निंदा की है। डॉ लोहिया ने तो एक बार उन्हें घूरे पर पलने वाले कीड़े की संज्ञा दी थी।

वास्तव में लाल टोपी वालों ने उसी प्रकार भारतीय परंपरा पर काम किया जिस तरह कोई भारतीय करता है। उन्होंने समाजवाद के दर्शन को भारतीय दर्शन से जोड़ा और समाजवाद का भारतीयकरण किया। जिस तरह डॉ अंबेडकर ने बौद्ध धर्म के सिद्धांतों के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में समावेशन की कोशिश की उसी तरह से लाल टोपी वालों ने बौद्ध दर्शन पर काम किया।

आचार्य नरेंद्र देव जिनकी नैतिकता किसी दमकते सूर्य की तरह से आज भी चमकती है उन्होंने `बौद्ध धर्म दर्शन' जैसा ग्रंथ लिखकर देश और दुनिया को बता दिया कि भारतीयता क्यों होती है और समाजवादियों ने उसे किस तरह से समझा है। उसी समय डॉ अंबेडकर `बुद्ध और उनका धम्म' लिख रहे थे।

काली टोपी वालों ने आजादी की लड़ाई से किनारा कर लिया था। उसके बाद वे गांधी की हत्या के आरोपी भी बने। उन पर प्रतिबंध लगा। देश की राजनीति में वे दरकिनार हो गए। यह तो लाल टोपी वालों का बड़प्पन था कि उन्होंने अपने संघर्षों में उन्हें शामिल किया, उन्हें अभय बनाया और फिर वे मुख्यधारा में लौटे। लेकिन विडंबना देखिए कि काली टोपी वालों को अपने काले दिल और काले इतिहास पर कोई लाज नहीं आती।

वे उल्टे लाल टोपी वालों के विचार, संघर्ष, नैतिकता के शानदार इतिहास को काला इतिहास बता रहे हैं। लाल टोपी वालों को ऐसी आलोचनाओं की परवाह किए बिना आगे बढ़ना चाहिए। इस देश के युवा हर गली और चौराहे पर खड़े होकर उनके काफिले का स्वागत करने के लिए उतावले हैं।

चार अक्टूबर 1992 को जब मुलायम सिंह यादव ने समाजवादी पार्टी की स्थापना की थी तो दो चीजों को सुनिश्चित किया। पार्टी के नाम में समाजवादी शब्द सुनिश्चित करना और दूसरा यह कि अधिवेशन में आए सभी प्रतिनिधियों के सिर पर लाल टोपीहो।

तब तक नेताजी नाम से अपनी पहचान बनाने वाले मुलायम सिंह उत्तर प्रदेश जैसे विशाल प्रदेश का शासन संभालने से लेकर काफी राजनीति कर चुके थे। वे जनता दल, जनता पार्टी, लोक दल, दमकिपा ही नहीं इसकी अनेक शाखाओं-प्रशाखाओं की राजनीति देख चुके थे।

समाजवाद नाम पर भी बार बार टूट-फूट का शिकार बनी राजनीति में तो उनका प्रशिक्षण ही हुआ था। तब तक काफी सारे लोग समाजवाद और कम्युनिस्ट जैसे पदों को रूढ मानने लगे थे। जन, जनता, समता, लोक, दलित, लोकतंत्र और विकास जैसे पदों को लेकर पार्टी बनाना, राजनीति करना फैशन में था।लेकिन मुलायम सिंह यादव ने समाजवादी शब्द को अहमियतदेना जारी रखा।

आज करीब तीन दशक बाद यह बात समझ आ रही है कि देश में अब तक की सबसे बड़ी और ताकतवर समाजवादी पार्टी और उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में सबसे ताकतवर संगठन खड़ा करने में 'समाजवाद' शब्द और लाल टोपी ने क्या भूमिका निभाई है। इतिहास के हिसाब से अपने खराब दौर में भी 'समाजवाद' ऐसा पतवार साबित हुआ है जिसने समाजवादी पार्टी को ज्यादा भटकने नहीं दिया है।

यह पद उसे बहुत तरह के 'समझौतों' से रोकता है तो लाल टोपी उसके कमजोर से कमजोर कार्यकर्ता को हौसला देने के साथ विरोधी को चैन से नहीं बैठने देती। यह रंग और यह पहनावा खुद को पहलवान समझने की गलती करने वाले भाजपाइयों को तब ज्यादा चुभने लगा है जब उत्तर प्रदेश के

हौसला बढ़ाती लाल टोपी

अरविन्द मोहन
लेखक, वरिष्ठ पत्रकार

लोकसभा चुनाव परिणामों ने मोदी-योगी-मौर्य सबकी नींद उड़ा दी है। इसलिए अब नया हमला लाल टोपी पर होने लगा है।

मोदी ने तो 2022 के चुनाव के समय लाल टोपी को रेड अलर्ट कहा था लेकिन अब योगी और केशव प्रसाद मौर्य जो कुछ कह रहे हैं वह उनकी कुंठा और नासमझी को बताता है।

दिलचस्प बात यह है कि खुद मुलायम सिंह जी ने अपने समय में ही लोल टोपी को ज्यादा लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया और सपा के कई सहयोगी संगठनों के सदस्यों के लिए भी लाल टोपी पहनने का कायदा बनाया। अखिलेश यादव के नेतृत्व में इसका चलन तब से और आगे गया है क्योंकि खुद वे संसद के अंदर ही नहीं हर मौके पर लाल टोपी पहनते हैं। नेताजी ने 1998 में समाजवादी युवजन सभा के लोगों से लाल टोपी पहनने को कहा तो अब लोहिया वाहिनी और यूथ ब्रिगेड के लोगों के लिए तो लाल टोपी उनकी वर्दी का हिस्सा है।

लाल रंग और उसी रंग की टोपी की जिद नेताजी ने क्यों की यह कभी खुलकर बताया नहीं, लेकिन यह उनकी समझ और निष्ठा से जुड़ी चीज है। जिस तरह पार्टी और राजनैतिक संगठनों के नाम में समाजवाद के रूढ़ होने या अन्य आकर्षक तथा नया पद आने की चर्चा पहले की गई है, रंगों और प्रतीकों में भी काफी नयापन आ गया था। 1992 तक सेकुलर राजनीति के साथ हरा रंग जुड़ गया था, दलित पक्षधरता के साथ नीला रंग उभरने लगा था। हरा झण्डा और हरे कपड़े का चलन भी देखा जा सकता है। लेकिन मुलायम सिंह ने लाल चुना तो उसकी वजह इसका क्रांति और शक्ति की अवधारणा से जुड़ाव था। इसी आधार पर पुरानी समाजवादी पार्टी ही नहीं भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों ने भी इस रंग का प्रयोग किया।

हिंदुस्तान में लाल रंग का राजनैतिक प्रयोग सबसे चर्चित तब हुआ जब पश्चिमोत्तर सीमी प्रांत के खूंखार पठानों, पख्तूनों और

कबायली लोगों के जवानों की भर्ती करके खान अब्दुल गफ्फार खान ने एक शांति सेना बनाई। ऐसा गांधी के प्रभाव से हुआ लेकिन इस शांतिप्रिय और अहिंसक फौज से, जिसकी पहचान उसके लोगों की लाल कुर्तियां थीं, अंग्रेजी हुकूमत सबसे ज्यादा डरी।

समाजवादी बिरादरी में लाल टोपी का चलन लोकनायक जयप्रकाश से शुरू हुआ। 1948 में जब वे सोवियत संघ के दौरे से लौटे तो लाल टोपी पहनने लगे थे। कई लोगों ने इस पर टीका टिप्पणी की वहीं ज्यादातर ने तारीफ की। इस टोपी के साथ एक खास बात जरूर जुड़ी थी जिसे हम अपने बचपन के अनुभव से कह सकते है।

लाल टोपी वाले पुराने समाजवादी कार्यकर्ता को समाजवाद, राजनीति और अर्थनीति की बुनियादी जानकारियों पर कोई नहीं टोक सकता था। उसकी समझ बहुत साफ थी और टोपी के साथ वह जो झोला लटकाए रखता था उसमें दो-चार पुस्तिकाएं और पर्चे होते ही थे जो पढ़ने, पढ़ाने और बेचने के काम भी आते थे। कई कार्यकर्ता इन पुस्तिकाओं की बिक्री के कमीशन से अपना खर्च चलाते थे-चन्दा मांगने से इसे बेहतर मानते थे।

निश्चित रूप से मुलायम सिंह यादव और उनके साथियों के मन में यही छवि होगी जब लाल टोपी का निर्णय हुआ। लाल टोपी का जलवा बढ़ाने के साथ उससे ऐसी भूमिका की अपेक्षा भी बनने लगी है। आज धीरे-धीरे करके और जमाने की हवा के खिलाफ काम करते हुए जब समाजवादी पार्टी के लाल टोपीधारी लोगों ने प्रदेश में भाजपा की सत्ता को चुनौती दी, अन्य दलों से आगे निकले, सांप्रदायिकता की राजनीति को उसके गढ़ में मात दी है, अयोध्या जैसी सीट जीतकर दुनिया में अपना नाम किया है, दलित-पिछड़ा-अल्पसंख्यक का मजबूत गठजोड़ बनाया है तो विरोधी खेमे में खलबली मचनी स्वाभाविक है। उत्तर प्रदेश ने एक बार फिर देश की राजनीति को नई दिशा दिखाई है।

इसलिए केशव प्रसाद मौर्य सरीखे नेता सिर्फ लाल टोपी पर हमला नहीं करते, वह यह भी सुना देते हैं कि समाजवादी लोग सिर पर लाल टोपी और जेब में सफेद टोपी रखते हैं जिसे मुसलमानों के बीच जाते ही पहन लेते हैं। असल में यह उनकी कुंठा है जो चुनाव बाद मुख्यमंत्री बनने का ख्वाब देख रहे थे। बिना कुछ किए-धरे उनको यह भ्रम था कि उत्तर प्रदेश में भाजपा की पराजय के बाद नेतृत्व परिवर्तन होगा और सिर्फ पिछड़ा होने के चलते उनको भाजपा नेतृत्व मौका दे देगा कि वे सपा के 'पीडीए' का मुकाबला कर लेंगे। उनको हवाई सपने दिखाने के लिए भाजपा के ही कुछ बड़े नेता जिम्मेवार हैं जिन्हें लगता है कि मात्र ऐसे ऊपरी उपायों से

सपा का मुकाबला किया जा सकता है।

जो बात मौर्य साहब पर लागू होती है वह एक हद तक ही योगी पर लागू होती है। उन पर अखिलेश यादव का यह कहना ज्यादा सही बैठता है कि जिस तरह सांड़ लाल रंग देखकर भड़कता है या जिन्हें अपनी शक्ति का व्यर्थ गुमान हो जाता है वही लाल रंग को देखकर भड़कते हैं।

वे यह भी कहते हैं कि लाल रंग तो शक्ति का धारणित रंग है और पूजनीय शक्तियों से इसका रिश्ता है। यह प्रेम मिलन और मेल मिलाप का रंग है। और जिनके जीवन में इन बातों का अभाव होता है वही लाल रंग पर इस तरह भड़कते हैं। वे इसकी शक्ति को अपने लिए चुनौती मानते हैं। लेकिन इसके साथ एक और बात जोड़नी जरूरी है तभी अचानक योगी आदित्यनाथ के इस तरह भड़कने का रहस्य समझ आएगा।

दरअसल उत्तर प्रदेश से लोक सभा चुनाव के नतीजे खराब होते ही भाजपा नेतृत्व ने योगी को हटाने का मन बना लिया था। कई तरफ से इसके संकेत मिलने लगे थे जिनमें केशव प्रसाद यादव का आचरण और बयान भी प्रमुख थे। उनको दिल्ली से बुलावा भी आया। योगी अड़े और उग्र हुए तो नेतृत्व कुछ सकपकाया। संघ ने भी योगी का पक्ष लिया। लेकिन जिस तरह से योगी ने कांवड़ यात्रा के समय फल और खाने-पीने का सामान बेचने वाले मुसलमानों से तख्ती पर नाम लिखकर दुकान या ठेले पर लगाने का हुक्म सुनाया संघ और भाजपा खेमे के लिए वह मास्टरस्ट्रोक बन गया।

समाज को इससे क्या नुकसान हुआ और अदालत में क्या किरकिरी हुई वह हिसाब अलग है। पर जिस तरह एक जिले का आदेश पूरे प्रदेश में और फिर उत्तराखंड, मध्य प्रदेश और राजस्थान में लागू हो गया, उसके मद्देनजर अब भाजपा नेतृत्व उनको हटाने का पंगा नहीं ले सकता था।

तब से पूरे उत्साह में नजर आ रहे योगी बुलडोजर से लेकर बांग्लादेश और हिंदुओं के 'काटने' का खतरा दिखाने जैसी अनेक किस्म की बातें करने लगे हैं। चुनाव के बाद पस्तहाल भाजपा नेतृत्व जैसे-तैसे सहयोगी जोड़कर सरकार चला रहा है। इन बयानों ने सहयोगी दल भड़कते हैं और अमित शाह का सारा प्रबंध कौशल विधानसभा चुनाव में लगने की जगह कभी केसी त्यागी को निपटाने में लग रहा है तो कभी चिराग पासवान को पंचर करने में। पर वे यह भूल जा रहे हैं कि आज मोदी और शाह पस्तहाल हैं और बैकफुट पर खेलकर किसी तरह दिन काट रहे हैं। वे यही फार्मूला चुनावी नतीजों से फ्रंटफुट पर आए अखिलेश यादव और लाल टोपीधारी समाजवादियों पर लागू नहीं कर सकते।

दिशाहीन सरकार

रामजी लाल सुमन
सांसद, राज्यसभा

यह महत्वपूर्ण नहीं है कि सरकार कितने दिन चली है बल्कि यह ज्यादा अहम है कि सरकार किस दिशा में चली या चल रही है। कहने में तनिक भी हिचक नहीं है कि जिस दिशा में श्री नरेंद्र मोदी की सरकार चली है, वह दिशा ही ठीक नहीं है। सचाई यह है कि सरकार आंकड़ों से या इश्तहारों से नहीं चलती है बल्कि सरकार जनता के भरोसे से चलती है।

इतिहास गवाह है कि जब भी किसी सरकार ने कोई अच्छा काम किया है तो लोग उसका जिक्र करते हैं। आम लोगों में उस काम की चर्चा होती है। दुर्भाग्यपूर्ण है कि नरेंद्र मोदी सरकार से आम आदमी का कोई रिश्ता नहीं है। किसान, नौजवान, बेरोजगार, आम आदमी कोई भी मोदी सरकार से खुश नहीं है। इसकी एक नहीं, अनगिनत वजहें हैं।

सरकार कहती है कि उसने 25 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से बाहर कर दिया है लेकिन यह सचाई से कोसों दूर है। संसद के एक लिखित जवाब में सरकार ने खुद स्वीकार किया है कि सरकारी महकमों में 9,64,359 पद खाली हैं। रेलवे ने पिछले 8 साल में 72 हजार से अधिक पद खत्म किए हैं और यह तय किया है कि भविष्य में इन पदों पर भर्ती नहीं होगी। रक्षा मंत्रालय ने मिलिट्री इंजीनियरिंग सर्विस की 9300 से अधिक नौकरियां खत्म कर दी हैं।

अब सवाल यह है कि सरकार को कौन मना कर रहा है कि वह इन खाली पदों को न भरे। सरकार दावा भी करती रही है कि हर साल 2 करोड़ लोगों को रोजगार दिया जाएगा। बड़ा सवाल है कि फिर सरकार लोगों को वायदे के मुताबिक रोजगार क्यों नहीं दे रही है? वह कुतर्क गढ़ने में जुटी रहती है। नतीजा, बेरोजगारी में इजाफा होता जा रहा है।

किसानों की दशा दुरुस्त करने के लिए भी मोदी सरकार की नीयत और नीति ठीक नहीं है। वह लगातार कृषि के संरक्षण और संवर्धन की बात तो करती है मगर खुद ही गलतफहमी की शिकार है। खाद की कीमतें दो बार बढ़ी हैं। कालाबाजारी भी बढ़ती जा रही है। पहले यूरिया की जो बोरी 50 किलो की आती थी, अब वह 45 किलो की ही रह गई है।

कृषि यंत्रों पर जीएसटी लगा हुआ है। किसान आंदोलनों को कुचला जा रहा है। सैकड़ों किसान मारे जा चुके हैं और एमएसपी को कानूनी गारंटी देने की सरकार की नीयत नहीं है। उत्पादन लागत बढ़ रही है लेकिन किसान को उत्पाद का सही भाव नहीं मिल रहा है।

आंकड़े गवाही दे रहे हैं कि गरीबी और भुखमरी बढ़ी है। रोजगार के अवसर कम हुए हैं। अगर ऐसा नहीं है तो फिर अगले 5 साल तक 81 करोड़ यानी 57 प्रतिशत लोगों को प्रतिमाह 5 किलो राशन देने के ऐलान की वजह क्या है। अहम सवाल यह है कि जब सरकार यह स्वीकार कर रही है कि लोग भूखे

हैं, उन्हें राशन मुहैया कराया जा रहा है तो सरकार उनके लिए रोजगार की व्यवस्था क्यों नहीं करती?

2014 से लेकर 2024 तक, मोदी सरकार ने 121 से अधिक सरकारी उपक्रमों को बेचा है। पंडित जवाहर लाल नेहरू से लेकर अटल बिहारी बाजपेयी और डॉ मनमोहन सिंह ने सरकारी उपक्रमों की संख्या को बढ़ाया लेकिन श्री नरेंद्र मोदी ने मुनाफे वाले सरकारी उपक्रमों को भी बेच दिया।

सरकारी उपक्रमों को बेचने के पीछे की मंशा भी साफ नजर आती है। यह पिछड़ों, दलितों को आरक्षण से वंचित करने की गहरी साजिश है। जाहिर है कि आरक्षण की व्यवस्था सरकारी उपक्रमों में ही लागू होगी। जब सरकारी उपक्रम ही नहीं होंगे तो आरक्षण की व्यवस्था स्वत: समाप्त हो जाएगी। 2019 के पब्लिक इंटरप्राइजेज सर्विस के मुताबिक सरकारी कंपनियों में कुल 15 लाख कर्मचारी हैं जिनमें 10 लाख 40 हजार स्थाई और 4 लाख 60 हजार अस्थाई कर्मचारी हैं। यहां एससी के लिए 1 5 प्रतिशत, एसटी के लिए 7.5 प्रतिशत और ओबीसी के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान है। कंपनियों के निजी हाथों में जाने से 49 प्रतिशत भर्तियां अपने आप खत्म हो जाएंगी।

कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि सरकार व्यवस्थित रूप से बाबा साहब अंबेडकर की बनाई हुई आरक्षण की व्यवस्था को खत्म करने पर तुली है।दरअसल यह सरकार दिशाहीन है। इसके और भी तमाम उदाहरण हैं। मसलन भाजपा ने 2019 के चुनाव घोषणा पत्र में 2022 तक प्रत्येक परिवार को पक्का मकान देने का वायदा किया था। अब सरकार कह रही है कि उसका लक्ष्य 3 करोड़ घर बनाने का है पर सवाल यह है कि यह मकान कब तक बन जाएंगे। उसका समयबद्ध कार्यक्रम क्या है?

देश के अब तक के 14 प्रधानमंत्रियों ने कुल मिलाकर 55 लाख करोड़ रुपये का कर्ज लिया जबकि अकेले मोदी सरकार ने 205 लाख करोड़ रूपये का कर्ज लिया है। कड़वा है मगर सच है कि देश के प्रत्येक नागरिक पर आज की तारीख में 1,40,000/- रुपये का कर्ज है। सरकारी कर्ज इस बात पर निर्भर करता है कि हमारी आमदनी कितनी है और हमारा खर्च कितना है।

2024 के चुनाव से पहले मोदी जी कहा करते थे कि अकेला मोदी सब पर भारी लेकिन इंडिया गठबंधन ने उनकी हालत ऐसी कर दी है कि अब तो रोज वह एनडीए का जाप करते हैं। मोदी सरकार की स्थिति के लिए यह शेर मौजू है—---

अपनी सूरत का खुद एहसास नहीं है मुझको,
मैंने गैरों से सुना है कि परेशान हूं मैं।

अभी हाल में प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि गांधी फिल्म बनने से पहले महात्मा गांधी को कोई जानता नहीं था, इससे ज्यादा तकलीफदेह और कुछ हो नहीं सकता। कुछ लोग महात्मा गांधी को कम जानते हैं, गोडसे को ज्यादा। लड़ाई दो धाराओं के बीच में है। गोडसे बनना बहुत आसान काम है लेकिन गांधी बनने में सैकड़ों वर्ष लग जाएंगे।

गांधी उस शख्सियत का नाम है कि दुनिया का जब कोई बड़ा शख्स हिंदुस्तान आता है तो वह किसी पूर्व राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री की समाधि पर नहीं जाता बल्कि महात्मा गांधी की समाधि पर सिर झुकाता है।

भाजपा को गाय प्रिय है, हमें भी गाय बहुत प्रिय है। गोमांस या बीफ का निर्यात अप्रत्याशित रूप से बढ़ा है। हमने अमेरिका को भी पीछे छोड़ दिया है। 2014 की निर्वाचन आयोग की वित्तीय वर्ष की रिपोर्ट के मुताबिक भाजपा ने बीफ कंपनियों से 250 करोड़ रूपये का चंदा लिया।

मोदी सरकार की नाकामियों, अधूरे वायदों और असत्य प्रचार की फेहरिस्त काफी लंबी है। 844 करोड़ रुपये की लागत से बना रामपथ बैठ गया। भाजपा एक आदिवासी महिला को राष्ट्रपति बनाने का प्रचार तो करती है मगर संसद के नए भवन के उद्घाटन, राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के समय राष्ट्रपति को भूल जाती है।

अगर राष्ट्रपति से राम मन्दिर का उद्घाटन कराया जाता तो पूरी दुनिया में इसका संदेश जाता। असल में भाजपा के लिए राम कभी भी श्रद्धा वाले व्यक्तित्व नहीं थे बल्कि उनके लिए वोट का इंतजाम थे। जब राम वोट में मदद नहीं कर पाए तो बीजेपी ने कर्नाटक में जय बजरंग बली कहना शुरू कर दिया। जब उससे भी काम नहीं चला तो जय जगन्नाथ कहना शुरू कर दिया। भविष्य में ये लोग जाने क्या-क्या कहेंगे!

उनके लिए इतना ही —-

पीते-पीते जहरेगम सब जिस्म नीला हो गया।
कुछ दिनों में देखिए हम आसमां हो जाएंगे॥

(लेखक द्वारा राज्यसभा में 2 जुलाई 2024 को दिए गए भाषण के संपादित अंश)

डिंपल जी ने किया शहीद की प्रतिमा का अनावरण

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी की सांसद श्रीमती डिंपल यादव ने 10 सितंबर को मैनपुरी के करहल विधानसभा क्षेत्र के नगला टांक गांव में अमर शहीद रामाधार सिंह यादव की प्रतिमा का अनावरण किया। प्रतिमा का अनावरण करने के बाद श्रीमती डिंपल यादव ने शहीद रामाधार सिंह यादव को पुष्पांजलि अर्पित की।

शहीद सम्मान समारोह में दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन भी हुआ। बाद में श्रीमती डिंपल यादव ने विजेताओं में पुरस्कार वितरित किया।

सम्मान समारोह में उपस्थित शहीद रामाधार सिंह के परवारीजनों ने कहा कि शहीद जवानों के परिवार स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव जी के सदैव ऋणी रहेंगे क्योंकि उनके फैसले से ही शहीदों का पार्थिव शरीर अब ससम्मान घर तक आता है।

कार्यक्रम में समाजवादी पार्टी के नेताओं, कार्यकर्ताओं के साथ समाजवादी सैनिक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष कर्नल शरद सरन और अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

भाजपा राज में
शहीद की प्रतिमा पर चला बुलडोजर

बुलेटिन ब्यूरो

बे लगाम हो चुकी भाजपा सरकार में अब शहीदों का भी सम्मान नहीं बचा है। देश की रक्षा के लिए जान गंवाने वाले शहीदों के अपमान से देशप्रेमी आहत और दुखी हैं। भाजपा की ऐसी करतूतों से देशप्रेमियों में गुस्सा पनप रहा है।

मैनपुरी में भाजपा सरकार ने जिस तरह कारगिल शहीद मुनीश यादव की 24 साल पहले बनी प्रतिमा पर बुलडोजर चलाकर ध्वस्त किया, उसने भाजपा की नकारात्मक राजनीति को दर्शा दिया है। यही नहीं भाजपा सरकार ने वाराणसी में गांधी चबूतरा व भारता माता मंदिर को सड़क चौड़ीकरण के नाम पर ध्वस्त कर दिया।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कारगिल शहीद के अपमान व वाराणसी में भारत माता मंदिर ध्वस्त करने पर कड़ा ऐतराज जताया है।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा अब शहीदों के स्मारक पर भी बुलडोज़र चलवा रही है। मैनपुरी में कारगिल के वीर शहीद मुनीश यादव के सन् 2000 में बने प्रतिमा स्मारक को मिट्टी में मिलाने का जो दुस्साहस प्रशासन ने शासन के इशारे पर किया है, उससे देश के सैनिकों और देशप्रेमियों के बीच मूक आक्रोश पनप रहा है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि देश के मान-सम्मान के लिए जीवन न्योछावर करने वालों की शहादत का मोल भाजपाई कभी नहीं समझ सकते हैं क्योंकि इतिहास गवाह है कि आज़ादी के आंदोलन में जो लोग स्वतंत्रता सेनानियों का साथ देने के बजाय औपनिवेशिक शासकों के कान-आंख बनकर रहे, वे भला बलिदान की क़ीमत क्या जानें।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा की सियासत शहीदों में भी भेदभाव करने लगी है। ये नकारात्मक राजनीति का निकृष्टतम रूप है। यदि भाजपा में जरा भी शर्म बची है तो मंडल से लेकर जिले स्तर के सभी बड़े अधिकारियों को तत्काल निलंबित करे और प्रतिमा-स्मारक की ससम्मान पुनर्स्थापना करे। कारगिल शहीद के स्मारक पर बुलडोजर चलाने का भाजपा सरकार का कुकृत्य निंदनीय है।

उन्होंने कहा कि काशी के प्रतीक चिन्हों को विकास के नाम पर तोड़कर भाजपा सरकार क्या वाराणसी की विरासत को ही खंडित कर देना चाहती है। अब रोहनिया में 55 साल पहले 1968 में बने गांधी चबूतरा व भारत माता मंदिर को चौड़ीकरण के नाम पर तोड़ दिया गया है। अगर 'क्योटो' इतिहास की धरोहर को धूल में मिलाकर बनना है तो परंपरा प्रेमी काशीवासियों के बीच इसके लिए एक सार्वजनिक जनमत करा लेना चाहिए।

अखिलेश को मिला शिक्षकों का समर्थन

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के मुखिया श्री अखिलेश यादव को मिशन 2027 में शिक्षक समाज का भी भरपूर साथ व समर्थन मिल गया है। शिक्षक समाज ने संकल्प लिया है कि 2027 में सभी एकजुट होकर श्री अखिलेश यादव की सरकार बनाएंगे क्योंकि शिक्षक समाज का सम्मान व अधिकार समाजवादी सरकारों में ही सुरक्षित रहा है।

शिक्षक दिवस के एक दिन पूर्व 4 सितंबर को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय लखनऊ में आयोजित सम्मान समारोह में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के गुरुजनों के प्रति आदर भाव व सम्मान से अभिभूत शिक्षकों ने यह संकल्प लिया। इस अवसर पर श्री अखिलेश यादव द्वारा 11 शिक्षकों को सम्मानित किया गया।

सम्मानित होने वालों में सर्वश्री प्रो बी. पाण्डेय, डॉ रूदल यादव अमेठी, डॉ आफताब आलम प्रयागराज, डॉ आरके पाठक देहरादून, डॉ संजय सोनकर वाराणसी, डॉ हरदेव सिंह कुशवाहा चंदौली, डॉ नरेश प्रताप सिंह लखनऊ, डॉ श्री प्रकाश औरैया, सुश्री अजरा मुश्ताक लखनऊ, श्री कौशल कुमार भदौडा मेरठ एवं डॉ राहुल दिल्ली शामिल रहे।

इस अवसर पर शिक्षक दिवस की बधाई देते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी ने हमेशा शिक्षकों को सम्मान दिया है। समाजवादी लोग जब भी सरकार में रहे, उन्होंने शिक्षकों को सम्मानित किया। उन्होंने शिक्षकों को भरोसा दिलाया कि सदैव उन्हें सम्मान मिलेगा। उन्होंने कहा कि नेताजी खुद भी शिक्षक रहे। वे शिक्षकों

का दुःख दर्द समझते थे। सरकार में रहने के दौरान उन्होंने शिक्षकों की तमाम समस्याओं का निराकरण किया।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि दुनिया में वही देश आगे बढ़े हैं जहां अच्छी शिक्षा है और शिक्षकों का सम्मान होता है। बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर, स्वामी विवेकानंद से लेकर तमाम महापुरूषों ने शिक्षा के महत्व पर अपने विचार रखे हैं। उन्होंने प्रदेशवासियों को भरोसा दिलाया कि वह आने वाली पीढ़ी को अच्छी शिक्षा के द्वारा मानसिक स्तर पर मजबूत बनाएंगे।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में किसान, नौजवान और महिलाओं के अलावा सबसे ज्यादा शिक्षक दुःखी हैं। शिक्षा का क्षेत्र बहुत बड़ा है। पढ़े लिखे नौजवान शिक्षक बनकर देश और समाज की सेवा करना चाहते हैं लेकिन उत्तर प्रदेश में हर स्तर की नियुक्तियों पर उंगली उठ रही है। शिक्षकों के बड़े पैमाने पर पद खाली हैं। भर्तियां नहीं हो रही है। सरकार पिछड़े, दलित वर्ग के शिक्षक अभ्यर्थियों के हक छीन रही है। जिन्हें हाईकोर्ट से न्याय मिल गया भाजपा सरकार उनका भी हक नहीं दे रही है।

इस अवसर पर समाजवादी शिक्षक सभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने प्रस्ताव पारित किया कि 2027 के विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी को प्रदेश की सत्ता तक पहुंचाने के लिए स्कूल, कॉलेज सहित शिक्षा के जुड़े विभिन्न क्षेत्रों और समूहों के साथ व्यापक संवाद एवं जनसम्पर्क स्थापित किया जाएगा।

सम्मान समारोह में सर्वश्री लाल बिहारी यादव, पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी, एमएलसी डॉ मान सिंह, आशुतोष सिन्हा, आशु मलिक विधायक के अलावा कुलदीप यादव, डॉ आरपी पाठक, इं वैभव पाठक, डॉ संतोष कुमार यादवआदि मौजूद रहे।

ओलंपिक के सितारों का सपा ने किया सम्मान

बुलेटिन ब्यूरो

पेरिस ओलंपिक में भारत के लिए पदक जीतने वाले सितारों का समाजवादी पार्टी ने सम्मान कर उनकी हौसला अफजाई की और देश के लिए पदक जीतने पर आभार जताया।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने ओलंपिक के पदक विजेता पहलवान अमन सेहरावत को शाबाशी देते हुए कहा कि पदक लाकर उन्होंने देश का मान बढ़ाया है। ओलंपिक सितारों पर देश को गर्व है। श्री यादव ने उन्हें और आगे बढ़ने व पदक पाने की परंपरा बनाए रखने का आशीर्वाद भी दिया।

पेरिस ओलम्पिक 2024 में कुश्ती के अपने वर्ग में कांस्य पदक विजेता अमन सेहरावत ने 5 सितंबर को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय

अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव से भेंट कर उनका आशीर्वाद लिया।

पदक विजेता अमन सेहरावत 21 वर्ष के ओलंपिक के युवा खिलाड़ी हैं। वह हरियाणा के झज्जर क्षेत्र के गांव बिहरोड के निवासी है और साधारण किसान परिवार से हैं।

भेंट के दौरान श्री अखिलेश यादव ने पदक विजेता अमन सेहरावत को बधाई देते हुए कहा कि खेलकूद को प्रोत्साहन देने पर ही खेल प्रतियोगिताओं में भारत नंबर एक पर पहुंच सकता है। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी ने हमेशा खेलकूद को बढ़ावा और सम्मान दिया। समाजवादी पार्टी के संस्थापक नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव स्वयं भी कुश्ती के नामी पहलवान थे। उन्होंने और समाजवादी सरकारों ने खेलकूद को प्राथमिकता दी। कई खिलाड़ियों को यशभारती से सम्मानित करके उनका मान बढ़ाया।

श्री यादव ने बताया कि समाजवादी सरकार में प्रतियोगिताओं में पदक विजेताओं को नकद धनराशि के साथ सरकारी नौकरी में भी वरीयता दी गई थी। समाजवादी सरकार में ही इकाना अन्तर्राष्ट्रीय स्टेडियम राजधानी में बनाया गया। सैफई में मास्टर चंदगीराम के नाम से स्टेडियम बनाया गया। जिलों में भी स्टेडियम बनाए गए तथा ग्रामीण क्षेत्रों में खेलों को भी बढ़ावा दिया गया था।

श्री अमन सेहरावत के साथ सागर पहलवान, संदीप सेहरावत, अर्जुन सेहरवत, राजीव शर्मा ने भी श्री अखिलेश यादव से भेंट की। इस अवसर पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी भी मौजूद रहे।

दूसरी तरफ 19 अगस्त को समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल ने पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाली इंडिया हॉकी टीम के प्रतिभावान खिलाड़ी गाजीपुर के राजकुमार पाल काे उनके गांव करमपुर जाकर बुके, अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

सम्मान कार्यक्रम में सर्वश्री डा.वीरेंद्र यादव विधायक जंगीपुर, ओपी भारती विधायक प्रतिनिधि सैदपुर,जिलाध्यक्ष सपा गोपाल यादव, हीरा यादव प्रमुख सैदपुर आदि उपस्थित रहे।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

दो दिन पहले जिसको उठाया और एनकाउंटर के नाम पर बंदूक़ सटाकर गोली मारकर हत्या की गयी। अब उसकी मेडिकल रिपोर्ट बदलवाने का दबाव डाला जा रहा है। इस संगीन शासनीय अपराध का सर्वोच्च न्यायालय तुरंत संज्ञान ले, इससे पहले की सबूत मिटा दिये जाएं।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जब जात देखकर अधिकारी हटाए जा सकते हैं तो क्या जात देखकर आम आदमी फंसाए नहीं जा सकते।

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

कुछ लोग कह रहे हैं कि यदि एनकाउंटर पर कोई शक़ है तो न्यायालय में जाकर गुहार लगाएं। ऐसे लोगों से बस इतना पूछना है कि क्या न्यायालय से किसी की जान भी वापस मिल सकती है?

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

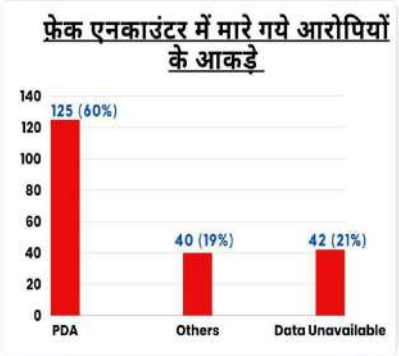

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

इस बच्ची के आँसूओं की गवाही के आधार पर माननीय न्यायालय व मानवाधिकार आयोग से तत्काल सक्रिय होने का अति विनम्र आग्रह है।

सत्ताधारियों और उनके समर्थकों व नाजायज़ कृत्यों में लिप्त भाजपा सरकार के अधिकारियों की 'अंतरात्मा' से भी आग्रह है कि अगर उनके अंदर हृदय शेष है और अंशमात्र भी संवेदनशीलता बची है तो वो भी इस बच्ची के दुख-दर्द को अपने परिवार की किसी बच्ची का दुख-दर्द समझकर, इस अश्रुपूर्ण व्यथा-विलाप का संज्ञान लें।

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा राज की ये धक्कामार रेल
डबल इंजन सरकार में इंजन फ़ेल

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा सरकार से आग्रह है कि रेलवे स्टेशनों के सिर्फ़ 'नाम' नहीं, हालात भी बदलें।

... और जब नाम बदलने से फ़ुरसत मिल जाएं तो रिकार्ड कायम करते रेल-एक्सीडेंट्स के हादसों के रोकथाम के लिए भी कुछ समय निकालकर विचार करें।

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

उप्र की भाजपा सरकार के एक मंत्री द्वारा मेरठ में सेवानिवृत सैनिकों एवं गरीबों की ज़मीन क़ब्ज़ा किये जाने की ख़बर शर्मनाक है।

बस इतना पूछना है कि सर्वज्ञ मुख्यमंत्री जी को इन भू-माफ़ियाओं के बारे में कुछ भी पता है या फिर सब कुछ पता होते हुए भी...

दोनों परिस्थितियों में ये मुख्यमंत्री जी की नाकामी है या फिर इस 'भू-हरण कृत्य' में उनकी हामी है।

#नहीं_चाहिए_भाजपा

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

ऐसी घटना कि शब्द भी शर्मसार हो जाएं। शब्दों की सीमा से परे निंदनीय!

उप्र में कहीं कोई सरकार है क्या?

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh · 5d

भाजपा सरकार का 'पुलिस के प्रति ज़ीरो टालरेंस' का कारनामा : पुलिस का भाजपाइयों ने किया अपहरण। अब क्या पुलिसवालों को एफ़आइआर लिखवाने भाजपा के मुख्यालय जाना पड़ेगा।

बस यही दिन देखना बाक़ी था।

#नहीं_चाहिए_भाजपा

Following

Akhilesh Yadav ✓
@yadavakhilesh

देश के वरिष्ठ राजनेता एवं सीपीएम के महासचिव श्री सीताराम येचुरी जी का निधन, अत्यंत दुःखद !

इश्वर उनकी आत्मा को शांति दें।

शोकाकुल परिजनों को यह असीम दुःख सहने का संबल प्राप्त हो।

भावभीनी श्रद्धांजलि !

Translate post

Akhilesh Yadav ✓
@yadavakhilesh

भगवान की अखंड भक्ति और पूर्ण प्रेम की आध्यात्मिक आराधिका 'राधारानी जी' के जन्मदिन पर सभी भक्तजनों को भक्तिमय बधाई!

Translate post

Akhilesh Yadav ✓
@yadavakhilesh

दिल्ली के लोकप्रिय व जन कल्याणकारी मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी की जमानत 'संविधान की जीत' है।

संविधान विरोधी ही संविधान का दुरुपयोग करते हैं। न्याय के दरवाज़े पर दी गयी दस्तक हमेशा सुनी जाती है। दुनिया अब तक इसी परंपरा पर आगे बढ़ी है और आगे भी बढ़ती रहेगी।

Translate post

Akhilesh Yadav ✓
@yadavakhilesh

'अन्याय के बुलडोज़र' से बड़ा होता है, 'न्याय का तराज़ू'।

Translate post

Akhilesh Yadav ✓
@yadavakhilesh

अगर आप और आपका बुलडोज़र इतना ही सफल है तो अलग पार्टी बनाकर 'बुलडोज़र' चुनाव चिन्ह लेकर चुनाव लड़ जाइए। आपका भ्रम भी टूट जाएगा और घमंड भी। वैसे भी आपके जो हालात हैं, उसमें आप भाजपा में होते हुए भी 'नहीं' के बराबर ही हैं, अलग पार्टी तो आपको आज नहीं तो कल बनानी ही पड़ेगी।

Akhilesh Yadav ✓
@yadavakhilesh

काशी के प्रतीक चिन्हों को विकास के नाम पर तोड़कर भाजपा सरकार क्या वाराणसी की विरासत को ही खंडित कर देना चाहती है। अब रोहनिया में 55 साल पहले 1968 में बने गांधी चबूतरा व भारत माता मंदिर को चौड़ीकरण के नाम पर तोड़ दिया गया है।

अगर 'क्योटो' इतिहास की धरोहर को धूल में मिलाकर बनना है तो परंपरा प्रेमी काशीवासियों के बीच इसके लिए एक सार्वजनिक जनमत करा लेना चाहिए।

Translate post

Akhilesh Yadav ✓
@yadavakhilesh

भाजपाइयों ने सस्ते में अपनों को खरीदवाया और जब बेचकर निकलने का समय आया तो भाजपा सरकार ने सर्किल रेट बढ़ाने का प्रबंध करवाया। अयोध्या की भूमि भाजपाई सौदेबाज़ी और मुनाफ़ाखोरी की शिकार हुई है। अयोध्या की जनता तो पहले ही जान गयी थी कि भाजपा का अयोध्या से भावात्मक-भावनात्मक लगाव नहीं बल्कि 'भू-नात्मक' व 'मुनाफ़ात्मक' लोभ है।

भाजपाई लालच ने जब अयोध्या को नहीं छोड़ा तो बाकी देश का क्या हाल कर रहे होंगे, ये कहने की बात नहीं।

भाजपा = भू ज़मीन पार्टी

Translate post

Akhilesh Yadav ✓
@yadavakhilesh

हिंदी दिवस की बधाई और शुभकामनाएँ! हिंदी सिर्फ़ भाषा ही नहीं संस्कार एवं संस्कृति भी है। सामाजिक सद्भाव और सौहार्द के रूप में हिंदी को भाषिक सूत्र मानकर चलनेवालों का सम्मान करना और उन्हें पुरस्कार दिया जाना सौभाग्य का विषय है। इस अवसर पर समाजवादी पार्टी द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित किये गये समस्त हिंदी सेवियों का हार्दिक अभिनंदन!

हिंदी की एकता शक्ति अद्भुत है।

Translate post

Akhilesh Yadav ✓
@yadavakhilesh

सपा कार्यालय।

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2024-2026 कुल पृष्ठ : 48 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

मैं लाल रंग हूँ

मैं लाल रंग हूँ,
सभी के संग हूँ,
चेहरे की रंगत हूँ,
तिलक बन माथे की शान हूँ,
रक्त में लाल लाल हूँ,
मैं लाल रंग हूँ सभी के संग हूँ।

उगते सूरज में हूँ
जलते दीपक में हूँ,
आग में हूँ,
क्रोध में मैं लाल लाल हूँ,
मैं लाल रंग हूँ सभी के संग हूँ,

खतरे की पहचान हूँ,
क्रांति की निशान हूँ,
दिशा की पहचान हूँ,
मंगल ग्रह भी लाल लाल है,
मैं लाल रंग हूँ सभी के संग हूँ।

सुहागन के सर का ताज हूँ,
प्रेम की पहचान हूँ,
सुख ,खुशी और उत्साह की पहचान हूँ,
कोमल और शक्ति की पहचान हूँ,
चुनरी में लाल लाल हूँ,
मैं लाल रंग हूँ।

- प्रदीप मांझी
(टांडा, अंबेडकर नगर)
साभार : अमर उजाला काव्य

QR कोड स्कैन करें और वाट्स-एप चैनल से जुड़ें
/Akhilesh Yadav
/Samajwadi Party
समाजवादी पार्टी
/samajwadiparty
www.samajwadiparty.in